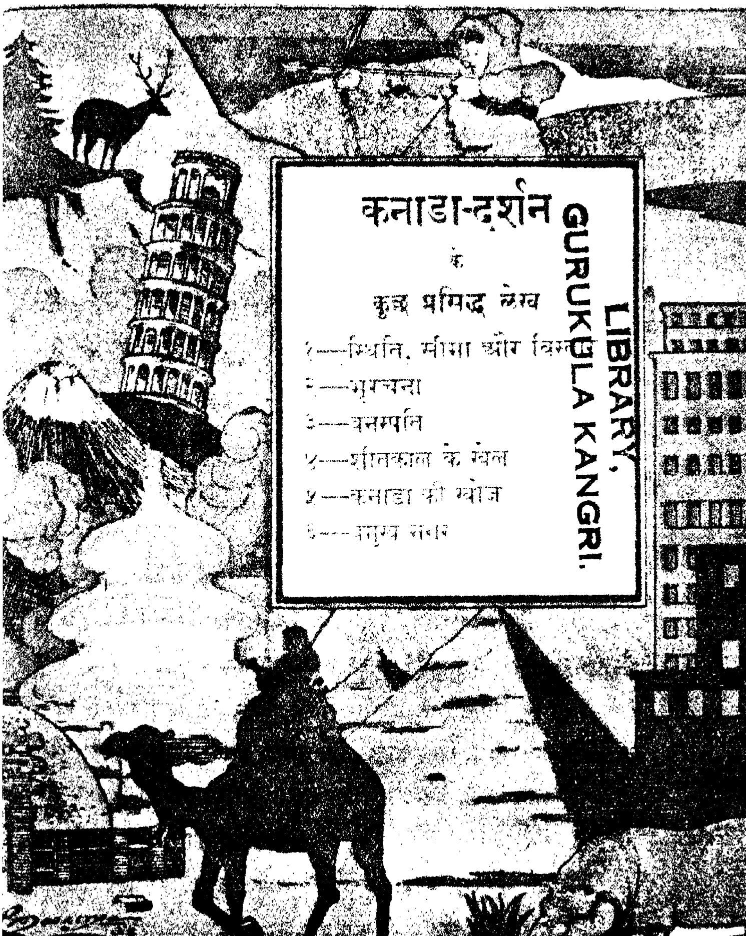
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—५१



कनाडा-दर्शन

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

Surgeon-in-chief Medical Studies
20.9.58

दिसम्बर, १९४२] [पौष २०००]

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ५]
संख्या ९
पूर्ण संख्या ५२

सम्पादक

प्रकाशक

44.2 / 5

20966 / 5-9-2001

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

44.2

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति, सीमा और विस्तार

कनाडा देश समस्त योरुप के बराबर है। यह भारत-वर्ष का दुगुना है। इसका क्षेत्रफल ३६,८४,७२३ वर्ग मील है। आरम्भ में इसके चार प्रान्तों का क्षेत्रफल ३,५०१८८ वर्ग मील था। १८७० ईस्वी में हडसन बे टेरीटरी (हडसन की खाड़ी का प्रदेश) मोल लिया गया। १८७१ में ब्रिटिश कोलम्बिया और १८७३ में प्रिन्स एडवर्ड कनाडा में मिल गया। इससे इसका क्षेत्र-फल ३४,७०,३९२ वर्ग मील हो गया। कुछ नये प्रदेशों का अनुसन्धान हुआ। इन सब के मिलने से कनाडा का क्षेत्रफल लगभग ३७ लाख वर्गमील हो गया जो समस्त ब्रिटिश साम्राज्य (१,२०,००,००० वर्ग मील) का प्रायः एक तिहाई है। कनाडा के इस क्षेत्रफल में १,८०,०३५ वर्ग मील जल है। शेष (३५,०४,६८८ वर्ग मील) स्थल है।

कनाडा देश अटलांटिक महासागर से प्रशान्त महा-सागर तक ८४ देशान्तरों में फैला हुआ है। इसके उत्तर में बरफ से ढका हुआ आर्क्टिक महासागर है। कनाडा

के दक्षिण में संयुक्तराष्ट्र अमरीका है। सुपीरियर झील के पश्चिम में ४६ उत्तरी अक्षांश कनाडा और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के बीच में सीमा बनाती है। बड़ी झीलों और सेंट लारेन्स के आगे सीमा फिर कृत्रिम है और ४५ उत्तरी अक्षांश के प्रायः समीप है। पश्चिम की ओर संयुक्त राष्ट्र का एलास्का प्रान्त है। पूर्व की ओर लब्राडार का किनारा भी कनाडा की राजनैतिक सीमा के बाहर है। पूर्वी सिरे से पश्चिमी सिरे तक कनाडा की लम्बाई २७०० मील है। उत्तर से दक्षिण तक कनाडा की अधिक से अधिक चौड़ाई १६०० मील है। पूर्व से पश्चिम तक कनाडा निम्न ६ प्रान्तों में बटा हुआ है:—(१) नोवास्कोशिया, (२) प्रिन्स एडवर्ड द्वीप (३) न्यूब्रंज़विक, (४) क्वेबेक प्रान्त (जिसका कुछ भाग सेंटलारेन्स नदी के दक्षिण में स्थित है अधिकतर भाग उत्तर में हडसन बे के तट तक चला गया है।) (५) आंटेरियो का प्रान्त बड़ी झीलों के उत्तर में हडसन की खाड़ी तक चला गया है।) (६) मेनीटोबा (७) सस्कचवान (८) अल्बर्टा और (६) ब्रिटिश कोलम्बिया हैं। ६० उत्तरी अक्षांश के उत्तर में ध्रुव

प्रदेश में यूकान टेरीटरी और नार्थ-वेस्ट टेरीटरी हैं। नार्थ वेस्ट टेरीटरी में मेकेंज़ी, कीवे टिन और फ्रैंकलिन प्रदेश शामिल हैं। कनाडा का दक्षिणी भाग प्रायः उसी अक्षांश में है जिसमें इटली का रोम शहर स्थित है। इसका उत्तरी सिरा उत्तरी ध्रुव से केवल २० अंश दूर है।

सूचना

उत्तरी मैदान और द्वीप हडसन की खाड़ी के उत्तर में स्थित हैं। यहां पृथिवी का पपड़ा धीरे धीरे नीचे धँस रहा है। जहां इस समय हडसन की खाड़ी है वहां पहले सूखा स्थल था। सामने वाले द्वीपों में होकर कई शताब्दी पहले अन्वेषकों ने उत्तरी-पूर्वी मार्ग से भारतवर्ष में पहुँचने का प्रयत्न किया था। कनाडा के यह उत्तरी मैदान लारेंशियन पठार के अंग हैं। हडसन की खाड़ी के दक्षिण में (कुछ लहरदार ऊंचा नीचा) मैदान है जहां हिमकाल की कई झीलें बन गई हैं।

पश्चिम की ओर राकी पर्वत हैं। राकी और प्रशान्त महासागर के बीच में सेल्कर्क और कस्केडी आदि पर्वत-श्रेणियां हैं। इनके बीच में पहाड़ी घाटियां और ऊंचे पठार हैं। इनमें माउंट लोगन की ऊंचाई १९८५० फुट है। सेंट इलियास चोटी १८००० फुट ऊंची है।

यह दोनों चोटियां यूकान टेरीटरी में स्थित हैं। प्रशान्त महासागर का तट बहुत कटा फटा है। इस ओर कई फ्योर्ड हैं। इस ओर वैंकूवर द्वीप बहुत बड़ा

है। इसका क्षेत्रफल वेल्स के बराबर है। पश्चिमी पर्वतीय प्रदेश की घाटियां बहुत गहरी हैं और प्रशान्त महासागर के लिये स्वाभाविक मार्ग बनाती हैं। तट की ओर पहुँचने के लिये पहाड़ों में कई दर्रे हैं। किकिंग हार्स और क्राउज़ नेस्ट दर्रों के आगे फ्रेज़र नदी की घाटी मिलती है। फिर भी पश्चिमीय पर्वत मार्ग में बड़ी बाधा डालते हैं। (३) पूर्व की ओर राकी पर्वत की तलहटी की पहाड़ियां मैदान में मिल गई हैं। मैदान से देखने पर यह पहाड़ियां ज़ीने के समान दिखाई देती हैं। सब से नीची पहाड़ियां समुद्र-तल से ७०० फुट ऊंची हैं। अधिक ऊंची पहाड़ियां ३००० फुट ऊंची हैं। इनके आगे पूर्व की ओर प्रेरी मैदान कई सौ मील लम्बा और चौड़ा है। यहीं सैकड़ों मील तक गेहूँ की खेती होती है। (४) बड़ी झीलें और सेंट लारेन्स की घाटी पूर्व की ओर स्थित हैं। पहले सेंट लारेंस नदी के मार्ग में न्याग्रा प्रपात स्वाभाविक बाधा डालता था। फिर जहाज़ों के लिये वीलैंड नहर बना ली गई। नदी शीतकाल में बरफ से जम जाती है। फिर भी यह नदी कनाडा का बड़ा उपयोगी जल-मार्ग

है। इन झीलों की तली की चट्टानें बड़ी कड़ी हैं। पुराने समय की बरफ ने इन्हें काट कर कुछ ही गहरा कर पाया था। इसलिये यह झीलें अधिक गहरी नहीं हैं। लेकिन छोटे जहाज़ों के लिये इनमें पानी बना रहता है। सुपीरियर झील समुद्र-तल से ६०० फुट ऊंची है। मिचीगन झील ५७८ फुट और हूरन झील ५७५ फुट ऊंची है। सेन्ट मेरी नदी के प्रबल प्रवाह को बचाने के लिये सुपीरियर और हूरन झील के बीच में सूनाम की तीन नहरें बनानी पड़ीं। प्रतिवर्ष स्वेज नहर की अपेक्षा सूनहर में चौगुना माल ढोया जाता है। न्यागरा प्रपात को बचाने के लिये वीलैंड नहर बनाई गई। गोटद्वीप ने न्याग्रा प्रपात को दो भागों में बांट दिया है। कनाडा की ओर वाला भाग १००० गज़ चौड़ा है। संयुक्त राष्ट्र की ओर न्याग्रा प्रपात की चौड़ाई केवल ३४० गज़ है। प्रपात की उंचाई १६० फुट है।

सेंट लारेन्स के मुहाने के सामने काफी दूरी पर न्यूफाउंड लैंड द्वीप है। यह द्वीप उथले समुद्र में स्थित है। प्राचीन समय में यह एपेलीशियन पर्वत-श्रेणी का अंग था। इस प्रकार भूगोल की दृष्टि से न्यूफाउंड लैंड कनाडा का अंग है। शासन के लिये न्यूफाउंड लैंड और लब्राडार का किनारा कनाडा से पृथक है।

जलवायु

कनाडा का विशाल देश ४२ उत्तरी अक्षांश से ध्रुव प्रदेश तक फैला हुआ है। यह तीन महासागरों को छूता है। इसके कुछ भाग समुद्र-तल से कुछ ही सौ फुट ऊंचे हैं। कुछ पर्वतीय प्रदेश कई हज़ार फुट ऊँचे हैं। कुछ भीतरी भाग समुद्र से कई सौ मील दूर हैं। इस प्रकार अक्षांश, उंचाई और समुद्र से दूरी में अन्तर होने से भिन्न भिन्न भागों का जलवायु भिन्न है। बीच वाला भाग मैदानी है। इसलिये शीतकाल में ध्रुव प्रदेश की ठंडी हवायें दक्षिणी भागों को भी बहुत ठंडा कर देती हैं। ग्रीष्म काल में गरमी का असर काफी दूर उत्तर की ओर पहुंचता है। इस प्रकार कनाडा के मध्य भाग की जलवायु विषम और महाद्वीपीय है। कनाडा के उत्तरी ध्रुव प्रदेश की ओर पश्चिमी राकी प्रदेश अधिक ठंडे हैं। ब्रिटिश कोलम्बिया के तटीय प्रदेश को समुद्री हवाओं से बड़ा लाभ होता है। शीतकाल में कनाडा के अधिकतर भागों में २० इंच से ४० इंच तक बरफ गिर जाती है। बरफ पर तरह तरह के खेल खेले जाते हैं। लेकिन पश्चिम की ओर गरम चिनूक हवायें अधिक समय तक

बरफ को धरती पर पड़ा नहीं रहने देती हैं। ब्रिटिश कोलम्बिया में समुद्र की ओर से आने वाली पछुवा हवायें ताप क्रम को ग्रीष्म में शीतल रखती हैं। शीत काल में भी यहां का ताप-क्रम अधिक ठंडा नहीं होता है। इस प्रकार यहां की जलवायु समशीतोष्ण है। ब्रिटिश कोलम्बिया का विक्टोरिया शहर प्रायः उसी अक्षांश में है जिसमें न्यूफाउंड लैंड का सेंट जान्स नगर है। लेकिन विक्टोरिया का औसत जनवरी ताप-क्रम ४० अंश और सेन्ट जान्स का २३ अंश रहता है। सेंट जान्स में ३ महीने तक शून्य अंश से नीचा तापक्रम रहता है। विक्टोरिया में किसी महीने में शून्य अंश से कम तापक्रम नहीं रहता है। जुलाई तापक्रम दोनों का प्रायः समान (६० अंश) फारेन हाइट रहता है। पूर्वी कनाडा में भी ध्रुव प्रदेश या बरफ से जमे हुये प्रेरी प्रदेश से आने-वाली ठंडी हवायें तापक्रम को बहुत नीचा कर देती हैं। उत्तरी कनाडा में शीतकाल की ऋतु बड़ी लम्बी और अत्यन्त ठंडी रहती है। ग्रीष्म काल साधारण गरम होता है लेकिन बहुत छोटा होता है। समस्त कनाडा में पर्याप्त वर्षा होती है। लेकिन पश्चिमी उच्च प्रदेश में



अजायबघर के मुश्की बैल।



चिड़ियाघर (ज़ू) में शील मछलियों को खाने के लिये वे गर्दन उठाए हुए हैं ।

हवा के सामने वाले भाग में सब से अधिक वर्षा होती है। सेन्ट लारेंन्स के प्रवाह प्रदेश और समुद्री प्रान्तों में भी अच्छी वर्षा होती है। पूर्वी और पश्चिमी कनाडा में कुछ न कुछ वर्षा साल भर होती रहती है। प्रेरी प्रदेश में ग्रीष्म काल में वर्षा होती है। ग्रीष्म ऋतु में प्रेरी प्रान्त अधिक गरम हो जाते हैं। इससे वहां की हवा अधिक हल्की हो जाती है। समुद्र की ओर से भाप से भरी हुई हवायें इस लघु भार के प्रदेश में आकर वर्षा कर देती हैं।

वनस्पति

कनाडा के अधिक उत्तर में बरफ के उजाड़ खंड हैं। कुछ भाग साल भर बरफ से ढके रहते हैं। टुंड्रा प्रदेश सरदी में बरफ से ढका रहता है। ग्रीष्म-काल में यहां छोटी घास, फूल और छोटे छोटे पौधे उग आते हैं। यहां एस्किमो लोग रहते हैं जो मछली मारते हैं और दूसरे जंगली जानवरों का शिकार करते हैं। अधिक आगे दक्षिण की ओर बन है। कनाडा का लगभग एक चौथाई भाग बन से ढका है। लगभग ५० करोड़ एकड़ भूमि बन से ढकी है।

प्रिंसएडवर्ड द्वीप को छोड़ कर कनाडा के और सभी भागों में बन है। इस बन में देवदारु, डगलसफर, सीडर, बोझ और स्प्रूस आदि कोणधारी वृक्ष हैं। स्प्रूस की लकड़ी हवाई जहाज़ के लिये उपयोगी होती है। राकी पर्वत के पूर्वी और पश्चिमी ढालों पर भी बन है। सेंट लारेन्स के प्रवाह प्रदेश और समुद्री प्रान्तों में भी बन है। केवल प्रेरी प्रदेश बन से शून्य है। कनाडा वासियों के लिये यह बन बड़ा उपयोगी है। कनाडा के आधे से अधिक मनुष्य लकड़ी के घरों में रहते हैं। दो तिहाई से अधिक मनुष्य लकड़ी का ईंधन जलाते हैं। लकड़ी से

मेज़ कुरसी अल्मारी, बाजा, यन्त्र कागज पल्प आदि तरह तरह का सामान बनाते हैं। प्रतिवर्ष कनाडा का २ अरब (२०० करोड़) रुपये का लाभ होता है। कनाडा की नदियों और झीलों के समीप प्रायः आरा चलाने वाली मिलें मिलेंगी। यहां पानी के किनारे पर बड़े बड़े लट्ठों का अपार समूह इकट्ठा होता रहता है। लोहे की बड़ी जंजीर अपने फौलादी दांतों से लट्ठों को पकड़ कर गोल आरे की मशीन के पास ले जाती है। आरे की मशीन के दूसरे सिरे पर लकड़ी के बुरादे का समूह इकट्ठा होता रहता है। मिल से दूर नदी के ऊपर लट्ठों का विशाल बेड़ा लोहे की जंजीरों से बंधा हुआ पहाड़ के समान दिखाई देता है। यह लकड़ी के बेड़े बरफ़ के पिघलने पर बसन्त ऋतु में नदियों के ऊपरी मार्ग से नीचे की ओर बहाये जाते हैं। बर्फीले पानी की बाढ़ से नदियां बड़े वेग से बहने लगती हैं। थोड़ी थोड़ी दूर पर उनमें भंवर हो जाते हैं। कभी कभी नदी में इतना वेग हो जाती है कि लट्ठों का बेड़ा टकराकर टूट जाता है। जंजीरों से जुड़े हुये लट्ठे अलग हो जाते हैं। ऐसी दशा में बहुत कम लट्ठे मालिक के हाथ आते

हैं। शेष इधर उधर बह जाते हैं या तली में चले जाते हैं। इससे मालिक को हज़ारों रुपयों का घाटा हो जाता है। कुछ मनुष्य लकड़ी के बेड़े के साथ रहते हैं। वे लम्बे बूट (जूते) पहनते हैं। इनकी तली में नुकीली कीलें जड़ी रहती हैं। इससे उनका पैर लट्ठों पर फिसलने नहीं पाता है। फिर भी इन्हें बहुत सँभल कर चलना पड़ता है। तेज बहने पर भी बेड़े को आरा की मिल तक आने में प्रायः तीन सप्ताह लग जाते हैं।

लकड़ी की कटाई

पूर्वी कनाडा के प्रायः प्रत्येक भाग से किसानों के लड़के और मज़दूर बरफ गिरते ही लकड़ी के बड़े घरों की ओर चल देते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ स्थायी लकड़ी काटने वाले होते हैं जो अपना जीवन इसी काम में बिताते हैं। स्थायी लकड़हारे बसन्त और ग्रीष्म में लट्ठों के बेड़े को नदी मार्ग से लाने का काम करते हैं। कुछ आरा की मिलों में मज़दूरी करते हैं। लकड़ी काटने वाले जहां तक रेल होती है वहां तक रेलगाड़ी

चावल पकाता है। शक्कर मिली हुई चाय प्रतिदिन बनाई जाती है।

जब मनुष्य शैंटी में पहुँचते हैं तो फोरमैन उन्हें चार-चार की टोलियों में बांट देता है। प्रत्येक टोली का नेता अलग होता है। प्रत्येक टोली को विशेष प्रकार का काम रहता है। सब से अधिक अच्छे मनुष्य पेड़ों को गिराते हैं और लट्ठे काटते हैं। एक टोली लट्ठों को घसीट कर केन्द्रवर्ती स्थान पर इकट्ठा करती है। यहां से घोड़े इसे खींच कर झील या नदी के पास तक ले जाते हैं। नये लोग सड़क बनाते हैं और लट्ठा खींचने वालों के आगे आगे झाड़ियां साफ करते जाते हैं। सब काम नियमित रूप से होता है इसलिये थोड़े ही समय में बहुत सा काम हो जाता है। लट्ठे पास वाली झील या नदी के किनारे या बरफ पर इकट्ठे किये जाते हैं। कोस्टर लोग ७० मील की दूरी से स्लेज गाड़ियों पर खाने पीने का सामान लाद कर ले आते हैं। भारी-भारी घोड़े स्लेज गाड़ी को खींचते हैं। प्रत्येक शैंटी का गोदाम और अस्तबल अलग होता है। रात में सब लोग जल्द सो जाते हैं और सूर्योदय से पहले ही

से आते हैं। इसके आगे वे बिना पहिये की स्लेज गाड़ी से बन में यात्रा करते हैं। कुछ लकड़हारे अपने साथ घोड़े लाते हैं और लट्ठों को बरफ से जमी हुई नदी तक ढोते हैं। इससे पहले ग्रीष्मकाल में बन के इन्स्पेक्टर और रेंजर लोग बन के एक भाग को लकड़ी काटने के लिये निश्चित करते हैं। यहीं बन काटने के पहले शैंटी लकड़ी के लट्ठों से बना हुआ एक लम्बा और नीचा घर होता है। छत का ढाल सामने से पीछे की ओर होता है। एक कोने पर बड़ा दरवाज़ा होता है। इसमें ५० मनुष्यों के रहने के लिये स्थान होता है। सोने के लिये ऊपर नीचे पंक्तियों में स्थान बने होते हैं। बीच में भोजन बनाने के स्थान पर एक फुट मोटी बालू बिछी रहती है। धुआं निकलने के लिये छत में छेद होता है। रसोइया पहले आग जलाकर बालू को लाल कर देता है। फिर वह कोयलों को उलट पलट कर बालू में लोहे की चपटी कड़ाही गाड़ देता है। इसी में वह रोटी, सुअर का मांस और फली पकाता है। कड़ाही को ढक कर वह कोयला निकाल लेता है। समस्त भोजन गरम बालू में ही पक जाता है। कभी-कभी वह मीठा

जाग जाते हैं। घोड़े जोतने वाले ३ बजे उठते हैं और पहले अपने घोड़ों को खिलाते हैं आध घंटे बाद सब लोग कलेवा करते हैं और चार बजे काम पर लग जाते हैं। दोपहर को सब लोग रक्खा हुआ ठंडा भोजन करते हैं। सायंकाल को यह लोग घर लौटते हैं। दिन भर देवदारू की सुगन्धित ठंडी हवा में कठिन काम करने से इन्हें बड़ी भूख लगती है। इससे यह लोग बड़े हट्टे कट्टे हो जाते हैं।

लकड़ी काटने का काम शीतकाल में ही हो सकता है। भूमि और दलदल बरफ से जमकर कड़े हो जाते हैं। इससे लकड़ी काटने वाले सुगमता से इधर उधर जा सकते हैं। शीतकाल में वन के पेड़ ठंडी हवा को रोक लेते हैं। इसलिये यहां काम करने वालों को काम करते समय अधिक जाड़ा नहीं लगता है। जब अप्रैल महीने में छोटी छोटी नदियों की बरफ पिघलने लगती है लकड़ी काटने वाले लट्ठ बहाने के काम में लग जाते हैं। बर्फीले पानी में लकड़ी बहाने वालों को बाढ़ वाली नदी में घंटों काम करना पड़ता है। बाढ़ थोड़े ही समय तक रहती है। इसलिये

लट्ठा बहाने में बड़ी शीघ्रता करनी पड़ती है। जो लट्ठे छूट जाते हैं वे दूसरे वर्ष तक पड़े रहते हैं। जब छोटी छोटी नदियां एकदम साफ हो जाती हैं तभी झीलों और बड़ी नदियों की बरफ भी पिघलने लगती है। पहले बड़ी नदी या झील में लट्ठों का बेड़ा इकट्ठा किया जाता है। लट्ठे रस्सी के टुकड़ों या जंजीर से एक दूसरे से बंधे रहते हैं। लट्ठों की संख्या प्रायः डेढ़ लाख होती है। इनका बेड़ा एक दो मील तक नदी को ढक लेता है। यह बेड़ा नदी की धार के साथ नीचे की ओर धीरे धीरे बहता है। इसमें लट्ठों की देख भाल करने के लिये मनुष्य रहते हैं। इसमें उनका भोजन पकाने के लिये रसोइया रहता है। सन्ध्या के समय लट्ठों का बेड़ा अनुकूल स्थान पर से रोक लिया जाता है। यहीं सब लोग नदी के किनारे घास पर भोजन करते हैं और रात्रि में डेरों में सोते हैं। लेकिन जब किनारे पर मच्छड़ अधिक होते हैं तब सब लोग बेड़े को बीच धार में ले आते हैं और वहीं बेड़े पर सोते हैं। नदी में प्रायः तेज धार होती है। ऐसे स्थानों पर लट्ठे प्रायः किनारों पर अटक जाते हैं। इस समय

लट्ठों की देख भाल करने वाले कील लगे हुये लम्बे बांस से लट्ठों को धार में ले आते हैं। यदि लट्ठों को समय से न हटाया जाय तो दूसरे लट्ठे भी आकर अटक जाते हैं और मार्ग रोक लेते हैं। लट्ठों को सम्भालने में लकड़हारे बड़ी होशियारी दिखलाते हैं। वे लम्बे बूट पहने रहते हैं। इनके नीचे नुकीली कीलें जड़ी रहती हैं। इससे एक लट्ठे से दूसरे लट्ठे पर कूदने में उनका पैर नहीं फिसलता है। वे बहते हुये लट्ठे पर नटों की तरह अपने शरीर को साध लेते हैं और दूसरे बहते हुये लट्ठे पर छलांग जाते हैं। झील में लट्ठों को खेने के लिये स्टीमर से सहायता ली जाती है। फिर भी बेड़ों को आरा चलाने की मिल तक पहुँचने में कई सप्ताह लग जाते हैं। बेड़े मिल में प्रायः अगस्त के अन्त अथवा सितम्बर के आरम्भ में पहुंचते हैं। आरा चलाने की मिल नदी के किनारे पर प्रायः ऐसे स्थान पर होती हैं जहां इसमें प्रपात के ज़ोर से बिजली तयार कर ली जाती है। इसी बिजली से आरा की मशीन चलती है। पास ही लकड़ी ढोने के लिये स्टीमर का घाट और रेलवे की स्टेशन होती है।

देश दर्शन

कनाडा की वनाग्नि

कनाडा के बनों में बिजली टूटने से गरमी के दिनों में अक्सर आग लग जाती है। इस ओर अपार बन बहुत पुराना है। यहां सफेद और काले स्प्रूस, देवदार और फर (बांझ) के ऊंचे पेड़ हैं। बड़े पेड़ों के नीचे छोटे छोटे पेड़ खड़े हैं। इस तरह आग को प्रज्वलित करने के लिये यहां ईंधन का अपार समूह है। नीचे जमीन पर गिरी हुई सूखी लकड़ी और पत्तियां पड़ी रहती हैं। लम्बी गरमी में पेड़ों की टहनियाँ अधिक सूख जाती हैं। उनके ऊपर गोंद निकल आता है। ऐसे बन में टहनियों की रगड़ या बिजली से चिनगारी पाते ही आग की ज्वालायें धधकने लगती हैं। लपट के ऊपर उठने से हवा तेज हो जाती है। इस हवा को पाकर आग ऐसी तेजी से आगे बढ़ती है कि पूरी तेजी से दौड़ने वाला घोड़ा भी आग के बराबर नहीं दौड़ पाता है। आग के साथ ही बड़े जोर से धाड़ने की आवाज भी होती है।

जिस तरह प्रेरी प्रदेश की आग घास को चटकर

जाती है उसी तरह से बन को आग पेड़ों को भस्म कर देता है। आग की लपटें सौ फुट ऊंचे पेड़ों की चोटी से और १०० फुट अधिक ऊंची उठती हैं। इस तरह से २०० फुट ऊंची लपटें छोटी मोटी झीलों और नदियों के ऊपर आग का पुल सा बना लेती हैं। वे दूसरे किनारे पर खड़े हुए पेड़ों को बड़ी आसानी से जला देती हैं। फिर यह आग की प्रबल नदी अपने रास्ते की सभी चीजों को भस्म करती हुई आगे बढ़ती है।

बन में रहने वाले जंगली जानवर धाड़ने की आवाज़ सुन कर और धुआं के बादलों को देखकर दूर से ही आग को ताड़ जाते हैं। डर के मारे भेड़िया, हिरण, भालू, लोमड़ी और खरगोश जान लेकर भागते हैं। इनके पीछे दूसरे और छोटे छोटे जानवरों की भीड़ दौड़ती है। पर आग उन्हें बहुत जल्द पकड़ लेती है और नष्ट कर देती है। अगर वे कभी भाग्य से किसी बड़ी नदी के किनारे समय से पहुंच गये तो बच जाते हैं। आटर, बीवर और मुश्की चूहे पानी से बहुत दूर नहीं रहते हैं। इसलिये वे अक्सर बच जाते हैं। चिड़ियाँ घबड़ा कर इस आग के पहाड़ के आगे हवा में

उड़ती हैं। लेकिन आग और धुआँ से उनका दम घुट जाता है। इसलिये दो चार मिनट उड़ने के बाद वे नीचे गिर पड़ती हैं और आग में स्वाहा हो जाती हैं।

ऐसी प्रलयकारी आग पहले बुझती दिखाई नहीं देती है। लेकिन कभी हवा का रुख बदलता है। कभी ज़ोर का पानी बरसने लगता है। कभी आग के मार्ग में कई छोटी छोटी झीलें पड़ जाती हैं। कभी पहले की जली हुई ज़मीन आ जाती है। इन सब कारणों से आग का अन्त हो जाता है।

आग के बाद सारा देश काला हो जाता है। पर दूसरे वर्ष छोटी छोटी झाड़ियाँ और अधजले पेड़ों की जड़ से नये अंकुर फूट निकलते हैं। पन्द्रह बीस वर्ष में दस बारह गज़ ऊँचे पेड़ों का वन हो जाता है। ५० वर्ष में देवदारू और दूसरे कोणधारी पेड़ अपना सिर ऊँचा करने लगते हैं। १०० वर्ष में चिनार के पेड़ सूख कर गिरने लगते हैं। उनकी जगह देवदारू के पेड़ घेर लेते हैं। इस तरह डेढ़ सौ वर्ष में फिर सब कहीं कोण-धारी वन हो जाता है। अन्त में सूखे ईंधन की अधि-

कता से फिर प्रलयकारी आग लगती है। आग का यह चक्र इसी तरह चलता रहता है।

शीतकाल के खेल

कनाडा में बरफ जमकर जब कड़ी हो जाती है तब यहां के लड़के और लड़कियां अपनी अपनी छोटी स्लेज और दूसरी खेल की चीज़ें लेकर एक टीले पर ले जाते हैं और ऊपर से नीचे की ओर फिसलते हैं। कभी कभी वे दो स्लेजों के बीच में एक तख्ता बांध लेते हैं। वे लोग इन पर बैठकर नीचे फिसलते हैं। स्लेज डाकगाड़ी से भी अधिक तेज़ नीचे की ओर चलती (फिसलती) हैं। सब लोग हंसते और चिल्लाते रहते हैं। जब कभी कोई बालक बरफ में गिर जाता है तब और भी अधिक हंसी होती है। बड़े लड़के बरफ के जूते (स्की) पहन कर मैदान में दौड़ते हैं। कुछ लोग बरफ पर छलांगते हैं। इसके बाद वे नियत सराय में भोजन करते हैं। यहां वे गाते बजाते हैं और तरह तरह से खुशी मनाते हैं। रात्रि में

वे घर लौटते हैं। अन्धेरी रात में वे टार्च या बिजली की बत्ती का प्रयोग करते हैं। चन्द्रमा और बिजली की रोशनी में बरफ का दृश्य और भी अधिक सुहावना हो जाता है। नौजवान प्रायः रेड इंडियन लोगों के ढंग से चलते हैं। कभी कभी वे छलांगते हैं और विचित्र ढंग से अपने आपको बरफ पर मारते हैं। सरदी की ऋतु में किसान अपने खेतों के घेरों अथवा रुकावटों को मार्ग से अलग कर देते हैं। खुश्क हवा और खुश्क बरफ में खेलने से बड़ा आनन्द आता है। इससे भूख भी खूब लगती है। स्त्री पुरुष सभी बरफ के खेल खेलते हैं। खेलने के लिये अलग अलग क्लब हैं। बरफ की हाकी बड़ा लोकप्रिय खेल है। हाकी का खेल प्रायः बड़े बड़े कमरों के भीतर खेला जाता है। बड़े कमरों को पानी से भर देते हैं। पानी जमकर बरफ में बदल जाता है। इससे चिकना और कड़ा धरातल तयार हो जाता है। बाहर बरफ कुछ ऊंची नीची रहती है। ताजी बरफ मुलायम भी होती है। बरफ की गेंद को पक कहते हैं। गेंद का वह भाग जो बरफ को छूता है बड़ा फिसलना रहता है। प्रायः

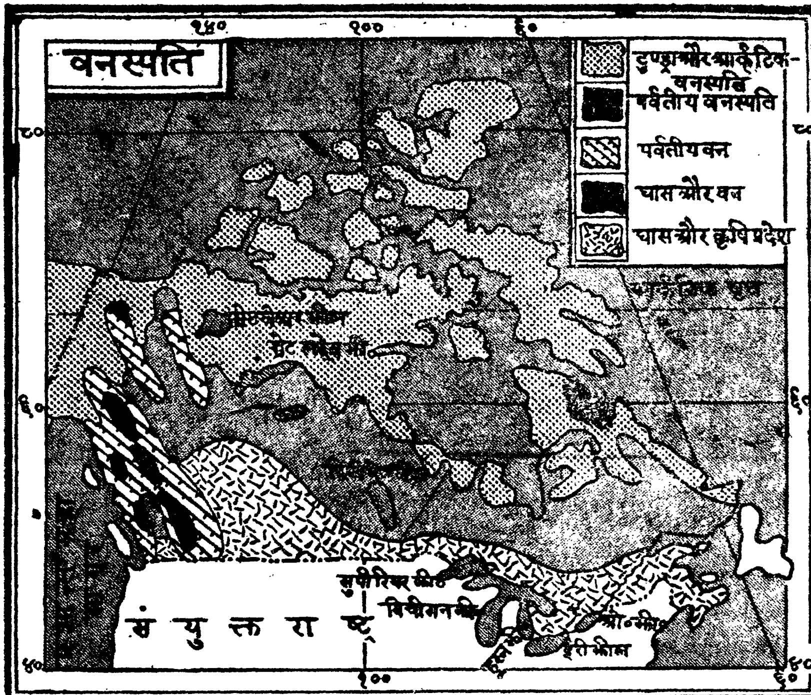
एक शहर के खिलाड़ी दूसरे शहर के साथ हाकी मैच खेलते हैं। टीम के साथ बहुत से लोग खेल देखने के लिये आते हैं। १८६३ में खेल का प्रोत्साहन देने के लिये स्टैनले कप की स्थापना हुई। माण्ट्रियल, ओटावा बिनी पेग आदि नगर इस कप को जीतने के लिये हाकी मैच में भाग लेते हैं।

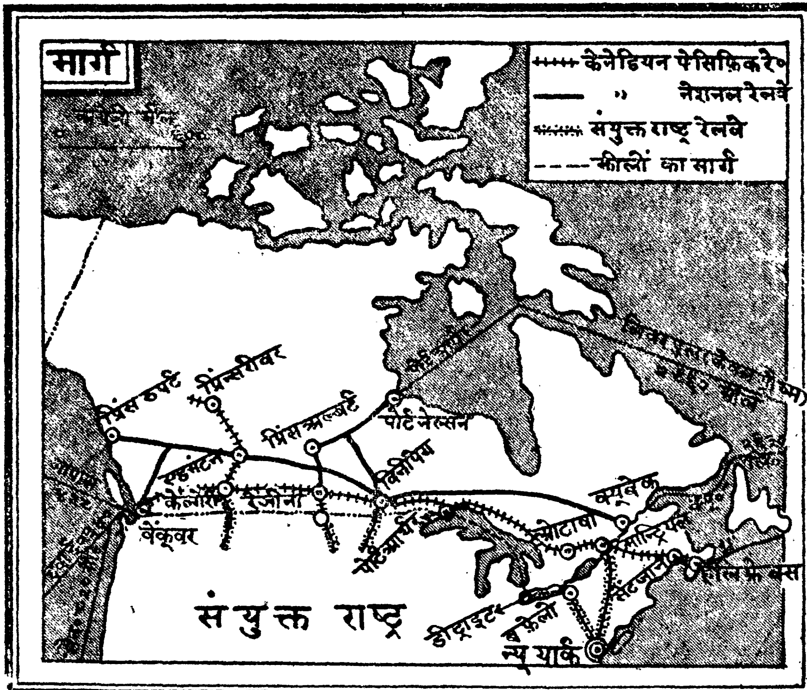
प्रथम बार बरफ गिरते ही लड़के लड़कियों को बरफ के खेलों का नशा सा हो जाता है। कारबार बन्द सा हो जाता है। शहर के लोग स्लेज लेकर खेल के लिये निकल पड़ते हैं। कुछ लोग प्राकृतिक पहाड़ियों पर चढ़कर बरफ पर फिसलते हैं। कुछ लोग लकड़ी के ढांचों से कृत्रिम टीले बना लेते हैं। इन पर बरफ एकत्रित हो जाती है। इनके एक ओर से लोग चढ़ते हैं दूसरी ओर से फिसलते हैं। पहाड़ियों के पड़ोस खेलने वाले भारी आग जलाते हैं। गरमी की ऋतु में मनोविनोद के लिये गोरे लोग रेड इंडियन लोगों की भांति झीलों के बीच में द्वीपों पर मनोविनोद में झोपड़े बनाते हैं और नाव चलाकर लम्बे दिन बिताते हैं। कुछ नावें हवा के ज़ोर से चलाई जाती हैं। कुछ

लोग स्नान करते हैं। कुछ लोग मछली मारते हैं। रात्रि को भारी आग जलाई जाती है। इसके चारों ओर लोग इकट्ठे होकर कहानियां सुनाते जाते हैं। और बाजा बजाते हैं। चांदनी रात में यहां का आनन्द और अधिक बढ़ जाता है। कुछ लोग रेड इंडियन लोगों से मार्ग पूंछ कर दूर तक नावें ले जाते हैं। दूर को यात्रा करने वाले ताज़ी मछलियों को मार कर तुरन्त पकाते और खाते हैं। रात्रि में वे डेरों में सोते हैं। शहरों के पड़ोस में बेस बाल, क्रिकेट, टेनिस, पोलो गोल्फ और दूसरे खेल खेलते हैं।

बर्फीली आंधी

कनाडा में अधिक तापक्रम नीचा हो जाने पर भी यदि हवा न चले तो सरदी असह्य नहीं होती है। शान्त हवा इतनी खुश्क होती है कि ठंड में लोगों को आनन्द आता है। यदि पानी के जमने के बिन्दु से भी तापक्रम ८० अंश नीचा हो जावे तो भी लोग कोट उतार कर लकड़ी काट कर या दूसरा कड़ा काम करके मनुष्य


वनस्पति
टुण्ड्रा और आर्कटिक-वनस्पति
पर्वतीय वनस्पति
पर्वतीय वन
घास और वन
घास और कृषि प्रदेश
संयुक्त राष्ट्र
सुपीरियर झील
मिशीगन झील
ईरी झील
१५०
१००
६०
८०
५०


मार्ग
केनेडियन पेसिफ़िक रे०
,, नेशनल रेलवे
संयुक्त राष्ट्र रेलवे
कीलों का मार्ग
संयुक्त राष्ट्र
प्रिंस रूपर्ट
प्रिन्सरीवर
प्रिंस अल्बर्ट
पोर्ट नेल्सन
एडमंटन
केलगेरी
रेजीना
विनीपेग
वेंकूवर
क्यूबेक
ओटावा
मान्ट्रियल
सेंट जान
हैलिफ़ेक्स
हेलीफ़ैक्स
डीट्रायट
बफ़ैलो
न्यू यार्क

अपने आप को गरम रख सकता है कभी कभी पैरों के नीचे की बरफ के टूटने और शब्द करने पर ही लघु तापक्रम का पता चल पाता है। टांगों तक गरम मोटे ऊनी मोजे, दस्ताने, बनियाइन और दस्ताने पहनने पर काम करने वाला मनुष्य कनाडा के अल्प तापक्रम का सामना भली भांति कर सकता है। लेकिन तेज़ हवा के चलने पर दूसरा ही हाल हो जाता है। कितने ही मोटे और गरम कपड़े पहनो हवा भीतर घुस जाती है हड्डी तक कंपा देती है। तेज़ बर्फीली आंधी में बाहर निकलना भयानक है। इस प्रकार की आंधी को ब्लिज़ार्ड कहते हैं इसके चलने पर आकाश में अंधेरा छा जाता है। मुलायम बरफ के स्थान पर हवा में काटनेवाली कड़ी नुकीली बरफ उड़ने लगती है। यह चेहरे को घायल कर देती है। इस आंधी की भयंकरता कनाडा की निम्न सच्ची कहानी से प्रगट होती है :—

कनाडा के प्रेरी प्रदेश के एक भाग में बर्फीली आंधी चलने लगी। यहां रहने वाले किसान को रहते रहते वायु मंडल के सम्पकर्ड और आकाश के रंग से इस आंधी की भीषणता का पता लग गया उसने शीघ्र ही

इसका सामना करने की तयारी की। उसने दौड़ कर अस्तबल के प्रत्येक घोड़े और गाय के सामने बहुत सी सूखी घास खाने के लिये रख दी। ब्लिजार्ड प्रायः दो तीन दिन तक लगातार चलती है। इसलिये उसने अस्तबल को भली भांति बन्द कर दिया। इसके बाद उसने बहुत सा ईंधन लाकर घर में रख लिया। अन्त में आंधी चलने पर वह निश्चिन्त हो गया। दो दिन और दो रात लगातार भयानक तूफानी बर्फीली आंधी चलती रही। इस बीच में आंधी एक क्षण के लिये भी बन्द न हुई। दो दिन के बाद किसान को ऐसा मालूम हुआ कि आंधी की तेज़ी घट गई है। इसलिये दीवार की खूंटी से टोपी उतार कर उसने सिर पर पहन ली और उसे ठड्डी के नीचे बांध लिया। फिर उसने टांगों तक आने वाले लम्बे बूट (जूते) पहन लिये। फिर उसने अस्तबल के घोड़ों और गायों का हाल लेने का निश्चय किया और जानना चाहा कि उन्होंने सब घास खा डाली अथवा उनके पास घास शेष है। उसने बाहर जाने के लिये रसोई घर के दरवाज़े की सिटकनी पर हाथ रक्खा। इतने ही में उसकी छोटी लड़की लूसी ने हाथ

फैलाकर कहा डैडी (पिता जी) मैं भी बाहर जाना चाहती हूँ । अस्तबल घर से केवल दस गज़ दूर था। फिर भी पिता दस वर्ष की लड़की लूसी को बाहर ले जाने में हिचकिचाया । फिर उसने सोचा छोटी लड़की इतने समय से घर के भीतर बन्द है कि थोड़ी देर बाहर हो आने से उसे लाभ ही होगा । उसने लूसी की मां की ओर देखा । मां का भी यही विचार था । इसलिये पिता ने मां की शाल लाने को कहा । माता पिता दोनों ने अपनी प्यारी लूसी को भली भांति शाल में लपेटा लाल काले कपड़ों में इस प्रकार लपटी हुई लड़की को किसान ने जब उठाया तब वह एक गठरी सी मालूम होती थी ।

किसान का अनुमान बाहर आने पर ठीक निकला बर्फीली आंधी पहले से कुछ कम हो गई थी । वह आसानी से अस्तबल में पहुंच गया । उसने घोड़ों और गायों को फिर चारा डाला । उसे सन्तोष हो गया कि वे फिर आराम से हैं । उसने घर जाने के लिये अस्तबल का दरवाज़ा खोला । इतने में घर छिप गया । घर का कोई चिन्ह भी नहीं दिखाई देता था । जब किसान

अस्तबल में था उसी समय तूफानी आंधी फिर लौट आई। इस बार आंधी पहले से भी अधिक तेज़ थी। लेकिन किसान के लिये घर तहुँचना आवश्यक था। घर न पहुंचने से उसकी स्त्री को घोर चिन्ता होती। उसे यह भी डर था कि उसकी स्त्री उसे ढूँढ़ने के लिये कहीं बाहर न निकल आवे। इसलिये उसने लूमी के चारों ओर शाल को भली भांति लपेटा और उसे अपने शरीर से लगा लिया। फिर किसान ने सिर नीचा करके बर्फीली आंधी में आगे बढ़ने का साहस किया। कुछ क्षण दौड़ने के बाद वह सांस लेने के लिये रुक गया। वह समझता था कि वह घर के पास आ गया क्योंकि घर।अस्तबल से केवल दस गज़ दूर था। अतः उसने दरवाज़ा टटोलने के लिये अपना हाथ बढ़ाया। उसे दरवाज़ा न मिला। फिर उसने इधर उधर चारों ओर हाथ फैलाया। लेकिन दरवाजे का कहीं कोई पता न चला। वह जान गया कि अन्धा कर देने वाली और काटने वाली बर्फीली आँधी में दस गज़ भी सीधे आना कठिन था। (कोई मनुष्य ऐसी आंधी में सीधा नहीं चल सकता) अतः वह घर के इधर उधर

भटक गया। इस अन्धकार और विकराल जाड़े में वह किधर को मुड़े इसको उसे बड़ी चिन्ता थी। वह यह नहीं जानता था कि घर किधर है। वह कहां खड़ा है इसका भी उसे ज्ञान न था। आगे बढ़ने से वह खुले प्रेरी में भी भटक सकता था अपने घर के कोने तक भी पहुँच सकता था। लेकिन खड़े रहने में कुशल न थी। खड़े रहने से विकराल शीत में वह जहां का तहां ही सुन्न होकर मर जाता! अतः जाड़े की चिन्ता न करके (जो उसके कलेजे तक पहुँच रहा था) वह कुछ झुका और झुके झुके उस ओर बढ़ा जहाँ वह समझता था कि घर होगा। दम लेने के लिये उसे फिर रुकना पड़ा। इस बार उसे घर फिर न मिला। इसी तरह तीसरी और चौथी बार फिर उसने विफल प्रयत्न किया। उसने घर पाने की आशा ही छोड़ दी थी। इतने में उसे धीमी आवाज़ सुनाई दी। वह जान गया कि उसका कुत्ता घर के भीतर भौंक रहा होगा। लेकिन यह आवाज बहुत दूर से आती हुई मालूम होती थी। अस्तबल छोड़े उसको पांच मिनट से अधिक नहीं हुये थे। वह सीधी रेखा में भी नहीं दौड़ सका था। बर्फीले झोंकों के विकराल

जाड़े से हड्डी तक कांप रही थीं। फिर भी लूसी को दबाकर किसान ने घर ढूँढ़ने के लिये पांचवीं वार प्रयत्न किया। भाग्य से कुत्ता थोड़ी थोड़ी देर के बाद भौंकता रहा। किसान भौंकने की दिशा में बढ़ने लगा। एक दो मिनट में उसके पैर एक कड़ी चीज़ में टकराये। वह पहचान गया कि यह वह खम्भा है जो आंधी में गिर गया है। इससे उसे तुरन्त अपनी स्थिति का पता लग गया। टूटे हुये घेरे इधर उधर चलता हुआ वह कुछ ही क्षण में घर के कोने के पास पहुँच गया। कोने से दरवाजा कुछ ही कदम आगे था। अन्त में उसका हाथ दरवाज़ों की सिटकनी पर पड़ा। इसे पाकर उसे जो आनन्द हुआ वह शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। वह घर के भीतर पहुंचा। लपटी हुई लूसी को उसने अपनी स्त्री की गोद में दिया। स्त्री ने लूसी की शाल और कुछ कपड़े उतारे तो उसे अपार दुःख हुआ। लूसी अपने पिता की बाहों में ही पड़े पड़े बरफ से सुन्न होकर मर चुकी थी।

———

बरफ के उजाड़खंड

कनाडा में बरफ के उजाड़खंड और वन प्रदेश में कोई ऐसी स्पष्ट सीमा नहीं है जैसी साइबेरिया के टुंड्रा और टैगा या वन प्रदेश में है। लब्राडार में उजाड़ हिम प्रदेश सबसे अधिक दक्षिण (५५° उत्तरी अक्षांश) तक पहुँच जाता है। यह लब्राडार की विशेष स्थिति के कारण है। लब्राडार का प्रायः द्वीप तीन ओर हिमाच्छादित समुद्रों से घिरा है। इसके तट पर आर्क्टिक (ध्रुव) प्रदेश से आने वाली धारा सदा बहती रहती है। हडसन की खाड़ी के सामने वाले किनारे पर उजाड़ हिम प्रदेश ६० उत्तरी अक्षांश से आराम होता है। इसके आगे वन प्रदेश अधिकाधिक उत्तर की ओर बढ़ता ही जाता है। मेकेंज़ी नदी के मुहाने के पास ६८ उत्तरी अक्षांश तक पाये जाते हैं। मेकेंज़ी के आगे हिम प्रदेश कुछ दक्षिण की ओर बढ़ जाता है। बेहरिंग प्रणाली के समीप ६५ उत्तरी अक्षांश तक वन है। इसके ऊपर उत्तर में हिम प्रदेश है। यदि इस प्रदेश में उत्तर की ओर वाले द्वीप भी सम्मिलित कर लिये जायँ तो कनाडा के उजाड़ हिम प्रदेश का क्षेत्रफल १५ लाख वर्ग

मील से ऊपर है जो समस्त भारतवर्ष के प्रायः समान है। हिम प्रदेश के आरम्भ होने के बहुत पहले ही नाम मात्र का वन रह जाता है। काले और सफेद स्प्रूस, लार्च और भूरे देवदारु आदि के वृक्ष नये से दिखाई देते हैं। ऊपर से देखने पर वे कुछ वर्ष से अधिक पुराने नहीं जान पड़ते हैं। वास्तव में ग्रेट बेयर झील आदि स्थानों के इन छोटे पेड़ों को हाथ की कलाई के बराबर मोटा होने में ४०० वर्ष लग जाते हैं। इसका कारण यह है कि यहां ग्रीष्म ऋतु इतनी छोटी होती है कि वृक्षों में नये किल्ले तो प्रत्येक वर्ष निकल आते हैं लेकिन नई लकड़ी बनने के लिये समय ही नहीं रहता है शीतकाल में वृक्षों का बढ़ना बन्द हो जाता है। अधिक उत्तर में वृक्ष नाटे होते होते इतने छोटे हो गये हैं कि प्रायः घास में छिप गये हैं। उजाड़ खंड के कुछ भागों में इस घासको चरने के लिये ध्रुव प्रदेश केरिबो हिरण पहुँच जाते हैं।

शीतकाल में उत्तर के उजाड़ हिमखंड बड़े डरावने हो जाते हैं। यहां एकदम सन्नाटा छा जाता है। यहां कोई जीवधारी नहीं होता है जिसका शब्द सुनाई दे। केवल कभी कभी बरफ के उल्लू और लोमड़ी का शब्द

सुनाई देता है। शीतकाल के मात आठ महीनों में यहां दूसरे किसी जानवर का शब्द सुनने में नहीं आता है।

मई महीने में बरफ पिघलने लगती है। जो दलदल शीतकाल में जम कर पत्थर के समान कड़े हो जाते हैं वे गरमी पाकर फिर ढीले होने लगते हैं। गरमी की ऋतु बरफ के इस उजाड़खंड में जीवन का संचार होने लगता है। पहले जंगली चिड़ियां इतनी संख्या में आती हैं कि आकाश इनके झुंडों से धुंधला हो जाता है। अधिकतर चिड़ियां मिसीसिपी और उसकी सहायक नदियों के दक्षिणी भाग से आती हैं। ग्रीष्म ऋतु में हिम प्रदेश में इन चिड़ियों को प्रचुर भोजन और एकान्त स्थान मिलता है जहां यह चिड़ियां अपने बच्चों की भली भांति रक्षा कर सकती हैं। हिम-हंस सर्व प्रथम यहां आते हैं। इनके बाद साधारण बतखें और दूसरे पक्षी आते हैं। बहुत से पक्षी बन-प्रदेश की सीमा से आगे अधिक उत्तर को चले जाते हैं। कुछ चिड़ियां खुले मैदान में घास पर अंडा देती हैं। इधर इन नवागन्तुक पक्षियों पर चील्ह और बाज आक्रमण करते रहते हैं। सितम्बर मास में हिम या पाला पड़ते ही चिड़ियां

दक्षिण की ओर फिर प्रस्थान कर देती हैं। लम्बी पूंछ वाली बतख सब से पहले प्रस्थान करती है। हिम-हंस अन्त में चलते हैं। टर्मीगन (Ptarmigan) प्रायः छोटी झाड़ियों में वहीं ठहर जाती हैं।

नई चिड़ियों के आने के बाद कुछ ही समय में हिम प्रदेश का रंग छोटी घास से हरा और भूरा हो जाता है। जो हिम लम्बे शीतकाल में नहीं पिघलती है वह नीचे दबी हुई बनस्पति की रक्षा करती रहती है। हिमावरण के नीचे तापक्रम में अधिक अन्तर नहीं होने पाता है। इन भागों में चार पांच फुट मोटी बरफ पड़ी रहती है। जब दिन लम्बे होने लगते हैं तब बरफ पिघलने लगती है। धूप पड़ने से बनस्पति बड़ी तेज़ी से बढ़ती है। केरिबो हिरण इस घास को चरने के लिये आ जाते हैं। केरिबो का रंग इसी घास के समान होता है। केरिबो हिरण योरुप और एशिया के रेन-डियर के समान होता है। अन्तर यह है कि केरिबो जंगली है। इसको पालने का प्रयत्न नहीं किया गया है। रेनडियर बहुत समय से पालतू हो गया है। शीत-काल में केरिबो हिरण ध्रुव प्रदेश के दक्षिण में बन में

रहता है और बरफ के नीचे दबी हुई केरिबो घास खाता है। केरिबो घास को अपने अगले पैरों के खुरों से खोद खोद कर खाता है। इससे शिकारी उसके अड्डों का शीघ्र ही पता लगा लेते हैं और उसे मार लेते हैं। शीतकाल में केरिबो एथेबास्का और ब्रिटिश कोलम्बिया के उत्तरी आधे भाग तक आजाता है। पहले केरिबो एलास्का में सब कहीं स्वच्छन्द विचरता था। जब से सोने की खानों में खुदाई होने लगी है तब से केरिबो उन स्थानों से दूर चला गया है।

कृषि

कनाडा में १६०५ में एना पोलिस में प्रथम वार एक खेत में गेहूँ बोया गया। इसके बाद खेती बढ़ती ही गई। कनाडा के उत्तरी भाग इतने ठंडे हैं कि वहां कोई फसल नहीं पक सकती। वहां हिम प्रदेश है अथवा वन फैला हुआ है। योरुप से आये हुये गोरे लोग पूर्वी भागों में पहले बसे वहीं खेती भी पहले आरम्भ हुई। इस समय भी वहां कुछ खेती होती है। लेकिन मध्यवर्ती प्रेरी

प्रदेश में सबसे अधिक खेती होती है। प्रेरी के मैनीटोबा सस्कचवान और अल्बर्टा प्रान्तों में लगभग ६ करोड़ एकड़ भूमि में गेहूँ उगाया जाता है। इसमें लगभग ६ करोड़ टन गेहूँ पैदा होता है। कनाडा के व्यापारिक जीवन में गेहूँ का सर्व प्रथम स्थान है, रेलवे, बैंक, एली-वेटर, अन्न के व्यापारी, बिजली और जहाज के मालिक गेहूँ के कारबार लगे हुये हैं। सभी लोग बड़ी तेज़ी से काम करते हैं। सुपीरियर झील के तट पर बसे हुये फोर्ट विलियम और पोर्ट आर्थर बन्दरगाह सितम्बर अक्तूबर और नवम्बर के महीनों में प्रायः ढाई करोड़ टन गेहूँ रेलगाड़ियों से उतार कर जहाजों में भर कर बाहर भेज देते हैं। आवश्यकता पड़ने पर इन नगरों के बड़े बड़े एलीवेटरों में प्रायः १ करोड़ टन गेहूँ रक्खा जा सकता है। एक दिन में २ लाख टन गेहूँ इन दो शहरों में रेलगाड़ियों से जहाजों में भरा जाता है। गेहूं इकट्ठा करने का सबसे बड़ा केन्द्र विनीपेग है। यह फसल के समय और भी अधिक फुर्ती से काम होता है। साठ बड़े डब्बों वाली गाड़ी को गेहूँ से भरने और इंजिन लगा कर स्टेशन से बाहर भेजने में केवल ३४

मिनट लगते हैं। फसल के दिनों में गेहूं से लदी हुई रेलगाड़ियाँ विनापेग और दूसरे स्थानों से झील के बन्दरगाहों को लगातार जाती रहती हैं। बसन्त ऋतु में जब बर्फ पिघल जाती है तभी मेरा प्रदेश का किसान अपने हलों को निकाल कर अपने बड़े बड़े खेतों के जोतने में लग जाते हैं। हल प्रायः मशीनों से चलते हैं जो कोयले या मिट्टी के तेल से चलाए जाते हैं। खेतों में मेड़ों पर झाड़ियाँ नहीं होती हैं। खेत इतने लम्बे चौड़े होते हैं कि कूंड की लम्बाई चौथाई मील, आध मील और कभी कभी एक मील तक होती है। यदि एक मील लम्बे और एक मील चौड़े खेत को बैलों की सहायता से जोता जावे तो दिन में केवल चार पांच कूंड़ हो पावें और पूरे खेत को एक बार जोतने में ही हफ्तों लग जावें। बोने में भी कई हफ्ते लग जावें। फसल को पकने के लिये समय ही न मिल पावे और फिर शीत काल आ जावे और बरफ़ गिरने लगे। लेकिन कनाडा के धनी किसान मशीनों से अपने खेतों को जोतते हैं। इससे हल दिन रात चलते रहते हैं। जोतने के बाद मशीनों से ही बीज बोने का काम होता है। पक जाने

पर काटने वाली मशीनें गेहूँ काटने में लग जाती है। कुछ मशीने काटने और गहने (माड़ने) का काम साथ साथ करती जाती है। करने के साथ साथ ही साफ गेहूं रेलगाड़ियों के डब्बों में भरता रहता है। बोरों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। रेलगाड़ियां इस गेहूँ को ऐसे नगर में पहुंचाती हैं जहां गेहूँ रखने के लिये बड़े बड़े एलीवेटर (अन्नागार या बुखारी) होते हैं। पहले यहां मशीन से चलने वाली बड़ी बड़ी चलनियों में गेहूँ को डाल कर मोटे और पतले गेहूँ को अलग कर देते हैं। मुटाई और सुन्दरता के अनुसार गेहूँ की कोटि (ग्रेड) नियत कर दी जाती है। ग्रेड (कोटि) नियत करने का कार्य बड़े बड़े सरकारी कर्मचारी करते हैं। यह गेहूँ के इन्स्पेक्टर विनीपेग में रहते हैं। वहीं होकर प्रायः सब गेहूँ झीलों के बन्दरगाहों को जाता है। तभी वहां गेहूँ की कोटि (ग्रेड) निश्चित की जाती है। ग्रेड के अनुसार किसान को प्रति बुशल के हिसाब से दाम दे दिया जाता है। एक बुशल ढाई गज से कुछ अधिक होता है। एक टन में १० बुशल होते हैं। तिनका (भूसा) इतना अधिक होता है कि किसान इससे छुटकारा पाने के लिये इसे जला

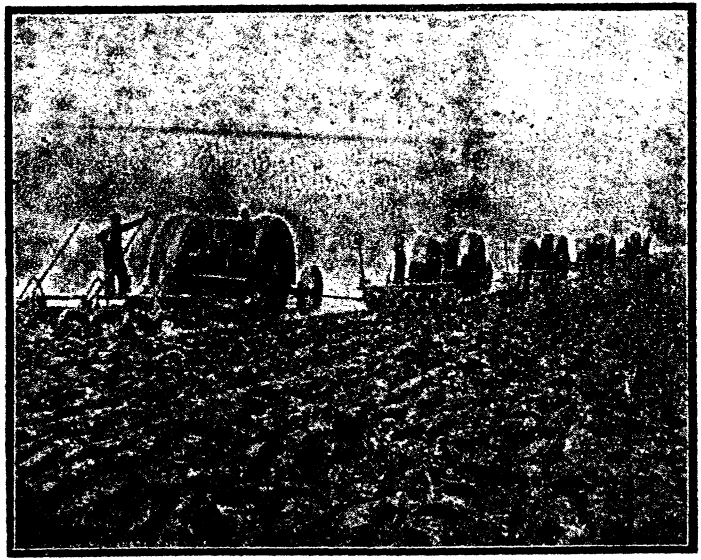
देता है। अगर प्रेरी प्रदेश के बड़े किसान की लगातार तीन फसलें अच्छी हो जावें तो वह अपना शेष जीवन बिना इस काम को किये हुये आराम से बिता सकता है।

फसल कटने के बाद रेलों का काम बहुत अधिक बढ़ जाता है। वे इस गेहूं को ढोकर बन्दरगाहों तक पहुँचाती रहती हैं। सुपीरियर झील के उत्तरी तट पर बसे हुये पोर्ट आर्थर और फोर्ट विलियम बन्दरगाहों में जहाज इसे भर कर झील सेंटल वरेन्स और इंगलैंड और स्काटलैण्ड को पहुँचाते रहते हैं। कुछ गेहूँ हड्सन की खाड़ी के नेल्सन बन्दरगाह से मार्ग से बाहर जाता है। यह मार्ग सीधा और छोटा है। वहां तक रेलवे बन गई है। लेकिन हड्सन की खाड़ी का मार्ग सब से पहले बरफ से घिर जाता है। बड़ी झीलों और सेंट लारेंस का जल मार्ग अधिक समय तक खुला रहता है। दिसम्बर में यह मार्ग भी बरफ से घिर जाता है। प्रशान्त महासागर पर स्थित वेंकूवर बन्दरगाह साल भर खुला रहता है। इसलिये १६२१ में कनाडा का कुछ गेहूँ इस मार्ग से बाहर जाता है। अधिकतर गेहूँ कनाडा में पीस लिया जाता है। इसी गेहूँ का आटा इंगलैण्ड, स्काटलैण्ड,

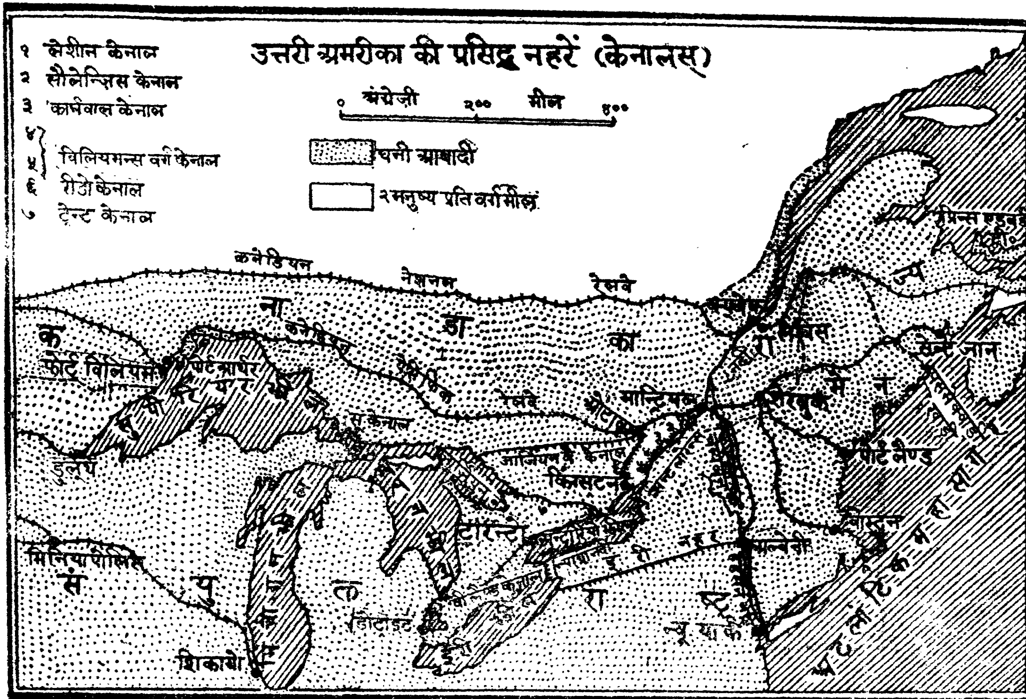
इटली, ग्रीस, यूरुप के दूसरे देशों, आस्ट्रेलिया, चीन और जापान को जाता है।

अलबर्टा प्रान्त में राकी पर्वत के ठीक पूर्व में जलवायु अधिक मृदुल है। यहाँ गाय बैल अधिक पाले जाते हैं। यहाँ घास बहुत होती है। यहां का सूखी घास पहाड़ों को पार करके ब्रिटिश कोलम्बिया में पहुंचती है। शीत-काल में भी अलबर्टा प्रान्त में दिन में धूप रहती है आकाश निर्मल रहता है। जब कभी कुछ बरफ गिर जाती है उसे यहां आनेवाली गरम चिनूक हवायें कुछ ही समय में चट कर जाती हैं। इसलिये यहां शीतकाल में भी अपने भारतवर्ष की तरह गाय बैल खुले मैदानों में चरते रहते हैं।

गेहूँ के अतिरिक्त कनाडा में लगभग ५ करोड़ टन जई और १ करोड़ टन जौ पशुओं को खिलाने के लिये उगाया जाता है। इनके अतिरिक्त राई मटर, आलू चुकन्दर आदि की फसलें भी अच्छी होती हैं। कुछ भागों में तम्बाकू होती है। शक्कर बनाने के लिये मेपिल वृक्षों से रस निकाला जाता है।



कनाडा के प्रेरी में नवीन ढंग की खेती ।


उत्तरी अमरीका की प्रसिद्ध नहरें (केनालस्)
१ लेशीन केनाल
२ सौलेन्जिस केनाल
३ कार्नवाल केनाल
४, ५ विलियमन्स वर्ग केनाल
६ रीडो केनाल
७ ट्रेन्ट केनाल
अंग्रेज़ी २०० मील ४००
घनी आबादी
२ मनुष्य प्रति वर्गमील
कनेडियन नेशनल रेलवे
फोर्ट विलियम
पोर्ट आर्थर
डुलूथ
मिनियापोलिस
शिकागो
डिटाइट
टोरन्टो
किंगस्टन
मान्ट्रियल
ओटावा
क्वेबेक
पोर्टलैण्ड
बोस्टन
आल्बेनी
न्यूयार्क
अटलांटिक महासागर
संयुक्त राष्ट्र

कनाडा-दर्शन

कनाडा की खोज

सबसे पहले योरुप के नार्समेन (नार्वे निवासी) उत्तरी अमरीका की ओर बढ़े। यह लोग वाइकिंग कहलाते थे। इनके कुछ साथी आइसलैंड में आकर बस गये। फिर वे ग्रीनलैंड में लगभग ९८५ ई० में पहुँचे। सम्भव है वाइकिंग लोग कनाडा में भी पहुँचे हों। वे कनाडा के किस भाग में पहुंचे और उन्होंने कहा उपनिवेश बसाये इसका ठीक ठीक पता नहीं चला। इनकी बस्तियां ग्रीनलैंड के ठंडे प्रदेश में अब से सैकड़ों वर्ष पहले ही उजड़ गई। १४९२ ईस्वी में कोलम्बस ने नई दुनिया का पता लगाया। इससे योरुप में सनसनी मच गई। इसी समय इंगलैंड के सप्तम हेनरी के शासन काल में जानकेबट नाम का एक इटेलियन मल्लाह इंगलैण्ड के बिस्टल बन्दरगाह में रहता था। वह भूमध्य एशिया के भूमध्यसागर के बन्दरगाहों से तरह तरह के मसाले ले आता था और इसी समुद्र के किनारे पर बसे हुये योरुप के बन्दरगाहों में बेंच देता था। इससे उसे बड़ा लाभ होता था। कोलम्बस की तरह केबट भी दुनिया को गोल समझता है और नये देशों में पहुँचने के लिये

बड़ा उत्सुक था। उसका विचार था कि पश्चिम की ओर अटलांटिक महासागर को पार करने पर वह पूर्वीय देशों में पहुंच जायगा। ब्रिस्टल में उसे अंग्रेजी मल्लाह मिले थे। मछली मारने के लिये नये समुद्रों में पहुंचने के लिये उत्सुक थे। १४९६ में केबट अपने बेटे सेबेस्टियन के साथ अटलांटिक के महासागर के उस पार नये देशों को ढूंढने के लिये निकला। वह अमरीका के किस स्थान पर पहुँचा इसका ठीक पता नहीं चलता है। लोगों का अनुमान है कि वह केप ब्रेटन द्वीप अथवा न्यूफाउंड लैंड में पहुंचा था। उसने लौट कर अँग्रेजी मल्लाहों को समाचार सुनाया कि नये समुद्रों में मछलियां उतनी अधिक हैं कि जाल डालने की आवश्यकता नहीं हैं। टोकरी में पत्थर बांध कर पानी के भीतर से मछलियां ऊपर लाई जा सकती है। इसके कुछ समय बाद इँगलैण्ड के प्रति-वर्ष मछली पकड़ने के लिये मल्लाह आने लगे। आरम्भ में यहां बस्तियां तो नहीं बसाई गई लेकिन मछलियां सुखाने के लिये झोपड़े बना लिये गये। कुछ लकड़ी के घर भी बना लिये गये। फ्रांस के लोग जंगली पशुओं की समूर (फर) के लिये कनाडा के प्रधान स्थान में

प्रायः प्रतिवर्ष आने लगे वे इन्हें रेड इंडियन लोगों से मोल लेने लगे।

१५३४ में ब्रिटेनी के सेन्ट मालो बन्दरगाह से जेम्स कार्टियार नामी फ्रांसीसी मल्लाह ने घर मल्लाहों और दो बड़ी नावों के साथ कनाडा के लिये प्रस्थान किया। यह फ्रांसीसी इस मार्ग से चीन जापान और हिन्दुस्तान को न पहुँच सका। लेकिन वह सेन्ट लारेन्स नदी के मार्ग से कनाडा के भीतरी भाग में घुसा। वहां उसने वन प्रदेश का पता लगाया। अटलांटिक महासागर की २००० मील लम्बी जल-यात्रा कार्टियर ने २० दिन में पूरी की थी। बोनाविस्ता अन्तरीप के पास उसके जहाज़ न्यूफाउंडलैंड अन्तरीप पर आ लगे। ब्यल आयल प्रणाली के मार्ग से कार्टियर किनारे किनारे उत्तर की ओर बढ़ा। लब्राडार के दक्षिणी तट पर अच्छा बन्दरगाह मिला। लेकिन तट की भूमि अच्छी न थी। कहीं उसे अच्छी मिट्टी नहीं मिली। यहां के लोग अपने लम्बे बालों का चुटीला बांधे रहते थे। इस में वे चिड़ियों के पर खोंसे रहते थे। प्रिन्स एडवर्ड द्वीप के पड़ोस में उसे जंगली पशुओं में वालरस

मिले जिनके दांत हाथी दन्त के समान लम्बे थे। कहीं कहीं जंगली फूल और फल थे। आगे बढ़ कर वह सेंट लारेन्स के मार्ग से भीतर की ओर घुसा। उसने इस नये देश का नाम कनाडा रक्खा। रेड इंडियन भाषा में कनाटा या कनाडा का अर्थ घरों का समूह या गांव है। शीतकाल उसने नदी के ऊंचे किनारों पर बिताया। उसने रेड इंडियन लोगों को लाल टोपी, चाकू आदि नई चीज़ें दी। बदले में उसने उनसे जंगली जानवरों की खालें ले लीं। कार्टियर नई दुनिया से कुछ रेड इंडियन और अद्भुत चीज़ें लेकर फ्रांस को लौटा। दूसरी बार वह उस स्थान तक पहुँचा जहां नदी के मध्यवाले द्वीप पर मांट्रियल बसाया गया।

सेमुयल चेम्पलेन नामी फ्रान्सीसी अन्वेषक १५६७ ई० में पैदा हुआ। १६०८ ईस्वी में उसने क्वेबेक से प्रस्थान किया। उसने इंडियन लोगों की गृह-कलह में भाग लिया। फ्रांसीसियों ने क्वेबेक और मांट्रियल नगर बसाये। १६०९ ई० में हेनरी हडसन ने हडसन नदी, ग्रीन लैंड के तट और हडसन की

खाड़ी का पता लगाया। इसी ध्रुव प्रदेश को यात्रा में उसका अन्त हो गया।

इंगलैंड के मल्लाह स्पेन के जहाज़ों को लूटने में लग गये थे। ड्रेक ले १५७७ में मेजीलन स्ट्रेट के मार्ग से अपनी लूट मार की यात्रा में अपना जहाज़ उस स्थान पर लगाया जहां इस समय सैन फ्रांसिस्को नगर स्थित है।

पांच वर्ष बाद हम्फे गिलबर्ट और उसके सौतेले भाई ने इंगलैंड से उत्तरी अमरीका के लिये प्रस्थान किया। गिल्बर्ट ने न्यूफाउंड लैंड पर ब्रिटेन का आधिपत्य घोषित किया। गिल्बर्ट की मृत्यु हो गई। लेकिन रालो अन्वेषण-कार्य में लगा रहा। उसने महानी एलिज़बेथ की स्मृति में फ्लारिडा के उत्तर की ओर वाले उपनिवेशों का नाम वर्जीनिया रक्खा। एलिज़बेथ वर्ज़िन (क्वांरी) थी। १५८५ में इंगलैंड के कुछ लोग यहां बसने के लिये आ गये। लेकिन उन्हें यहां का जीवन पसन्द न आया अतः ड्रेक उन्हें फिर इंगलैंड लौटा ले गया। इसी समय जान डेविस हेनरी हडसन, विलियिम बेफिन उत्तरी पश्चिमी मार्ग की खोज में कनाडा के उत्तरी भागों का पता लगा रहे थे।

देश दर्शन

१६०७ ईस्वी में लगभग १०० अंग्रेज़ जेम्स नदी के मुहाने पर वर्जीनिया में बस गये। दक्षिणी भाग के अंग्रेज़ हब्शी गुलामों को मोल लेकर तम्बाकू और शक्कर के व्यापार से लाभ उठा रहे थे। लेकिन अटलांटिक तट के उत्तरी भाग में धार्मिक स्वाधीनता के लिये इस नये महाद्वीप में आये थे।

फ्रांसीसी लोग सेंट लारेन्स नदी के ऊपरी भाग में बड़ी झीलों तक पहुंच गये थे। मिसीसिपी नदी के मार्ग से दक्षिण की ओर बढ़कर उन्होंने मेक्सिको की खाड़ी का पता लगा लिया था। उन्होंने इस प्रदेश में कई व्यापार-केन्द्र स्थापित कर लिये थे। अंग्रेज़ी उपनिवेशों का एक प्रकार से भीतर की ओर बढ़ने का मार्ग रुक गया था। मेरी लैंड में केथालिक और पेन्सिल्वेनिया में क्वेकर बस गये थे। १७५६ में सप्तवर्षीय युद्ध आरम्भ हुआ। १७५३ में सन्धि हो गई। लेकिन अमरीका में फ्रांसीसी शक्ति का अन्त हो गया। स्पेन वाले पश्चिमी भाग में बढ़ रहे थे। कुछ ही वर्षों के बाद अमरीका में इंगलैण्ड के विरुद्ध स्वाधीनता का युद्ध छिड़ गया। यहां बसे हुये राजभक्त अंग्रेज़ों ने इंगलैंड का साथ दिया। पर स्वा-

धीनता के वेग को रोकने में इंगलैंड को सफलता न मिली। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में स्वाधीन राज्य स्थापित हो गया। राजभक्त डर कर कनाडा को चले आये। पूर्वी भाग में अधिकतर फ्रांसीसी बसे हुये थे। इसलिये अंग्रेज़ लोग कनाडा के पश्चिमी प्रान्तों में फैलने लगे।

कनाडा की जनसंख्या बड़ी तेज़ी से बढ़ी। उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में यहां केवल ढाई लाख निवासी थे। ५० वर्ष बाद यह जन संख्या बढ़कर २४ लाख हो गई। उन्नीसवीं सदी के अन्त में कनाडा की जनसंख्या ५३ लाख हो गई। १६०३ और १६१३ के बीच में योरुप से लगभग २५ लाख नये लोग आकर बस गये। कनाडा में बसने से इंगलैंड के गोरे लोगों को तरह तरह का प्रोत्साहन दिया गया। उन्हें मुफ्त या नाम मात्रके मूल्य पर भूमि दी गई। उन्हें घर बनाने और खेती करने के लिये कनाडा की ओर से सरकारी सहायता मिलने लगी। इसलिये यहां सब से अधिक अंग्रेज़ बसे हुये हैं। एशिया वासियों को यहां बसने से रोकने के लिये तरह तरह के नियम बने हुये हैं। इसलिये हिन्दुस्तान, चीन, जापान आदि एशिया के बन देशों के मनुष्य कनाडा

के खाली प्रदेश को स्वाधीनता पूर्वक भरने में असमर्थ है। फिर भी १९३१ में कनाडा की जन संख्या १,०३,७६,००० हो गई।

प्रमुख नगर

एम्हर्स्ट फण्डी बे (खाड़ी) की एक शाखा कम्बरलैंड बेसिन के सिरेपर हेलीफैक्स से १३८ मील उत्तर की ओर स्थित है। यह एक कृषि-प्रदेश का केन्द्र है। इसके पड़ोस में कोयले की खानें और लकड़ी के वन हैं यहां इंजीनियरिंग आरा चलाने और ऊनी कपड़ा बुनने का काम होता है। बेरी सिन्को झील के किनारे पर टोराण्टो से ६३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। यहां गाड़ी के डब्बे, तम्बाकू, चमड़े का और ऊनी कपड़ा बनाने और आटा पीसने के कारखाने हैं, गरमी की ऋतु में यहां बहुत से लोग सैर करने आते हैं।

बेलविली आंटेरियो झील के किनारे टोरांटो से ११३ मील पूर्व की ओर स्थित है। यह मक्खन और दूध के कारबार का प्रधान केन्द्र है। यहां लोहे की

ढलाई, मिट्टी के बर्तन और सीमेण्ट बनाने के कारखाने हैं।

बर्लिन टोरांटो से ६० मील पश्चिम की ओर कनेडियन पेसिफिक रेलवे का एक स्टेशन है। यहां चमड़ा कमाने, जूता बनाने, लकड़ी का सामान, शक्कर और मोटरों के टायर बनाने के कारखाने हैं।

बैंडन एसिनी बोइन नदी के किनारे विनीपेग से १३२ मील पश्चिम की ओर कनेडियन पेसिफिक रेलवे पर स्थित है। यहां अनाज रखने के एलीवेटर, आटा पीसने, शराब बनाने और मक्खन बनाने के कारखाने हैं। यहां कनाडा की सरकार की ओर से प्रयोगात्मक कृषिशाला है।

ब्रैंटफर्ड टोरांटो से ५८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह कनेडियन पेसिफिक रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है। यहां मोटरकार, रेल के डब्बे, कृषि यन्त्र, जूता और सीमेंट बनाने का काम होता है और आटा पीसा जाता है।

ब्राकविली सेंट लारेन्स नदी के किनारे पर माण्ट्रियल से १२६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित है।

यहां कृषियन्त्र इंजिन, मोटर बोट स्टोव, बर्तन और गाड़ियां बनाने का काम होता है, यहां से मक्खन भी बाहर को भेजा जाता है।

केलगेरी बो नदी के किनारे पर विनीपेग से ८६० मील पश्चिम की ओर राकी पर्वत ५० मील पूर्व की ओर कनेडियन पेसिफिक और कनेडियन नर्दन रेलवे लाइनों का एक स्टेशन है। यह एक कृषि और पशु प्रदेश का केन्द्र है। राकी पर्वत और ब्रिटिश कोलम्बिया के खनिज केन्द्रों को यहीं से सब प्रकार का सामान जाता है। यहां रेलवे का एक बड़ा कारखाना है। इसके अतिरिक्त यहां आटा पीसने, आरा चलाने, चमड़ा कमाने के कारखाने हैं। इसके पड़ोस में इमारती पत्थर और प्राकृतिक गैस बहुत है।

चार्लोटी टाउन प्रिंसएडवर्ड द्वीप की राजधानी और सुन्दर बन्दरगाह है। इसके पास ही तीन नदियों का संगम है। यहां आरा चलाने और लोहा ढालने का काम होता है। कंडेस्ड (गाढ) दूध, सुअर का मांस और मछली बाहर भेजी जाती हैं।

चैथम ईरी झील से १३ मील उत्तर की ओर टेम्स

नदी के किनारे टोरांटो से १८० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। कनेडियन पेसिफिक रेलवे का एक स्टेशन है। यहां ऊनी कपड़ा बुनने, गाड़ी के डब्बे बनाने, आटा पीसने, फलों का मुरब्बा बनाने के कारखाने हैं।

चिकूटिमी सेग्वेने नदी के किनारे पर क्वेबेक से २२७ मील उत्तर-पूर्व की ओर कनेडियन नर्दन रेलवे पर स्थित है। यहां लकड़ी चीरने और कागज़ की लुब्दी बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं। चमड़ा कमाने और पनीर बनाने का भी काम होता है।

कोबाल्ट नगर कोबाल्ट झील के किनारे टोरांटो से रेल द्वारा ३३० मील दूर उत्तर की ओर स्थित है। यहां संसार भर में सब से अधिक धनी चांदी की खाने हैं। चांदी की कच्ची धातु में जो बाल्ट, निकेल और आर्सेनिक भी पाया जाता है।

कोबर्ग आर्टेरियो झील का एक बन्दरगाह है। यह टोरांटो से ६६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां कनेडियन पेसिफिक रेलवे और ग्रांडट्रंक रेलवे का जंक्शन है। यहां रेल की पटरियां और रेल की गाड़ियां बनाने का कारखाना है। यहां ऊनी कपड़ा बनाने के कारखाने

हैं। गरमी की ऋतु में यहाँ बहुत से लोग सैर करने के लिये आते हैं।

कालिंगवुड हूरन झील की जार्जियन बे (खाड़ी) पर एक बन्दरगाह है। यह टोरांटो से ७८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर ग्रांडट्रंक रेलवे का एक स्टेशन है। यहां चमड़ा कमाने, लकड़ी चीरने और लोहा ढालने के कारखाने हैं। यहां कील और जहाज़ बनाने के भी कारखाने हैं। मांस, अन्न और लकड़ी का व्यापार होता है।

कार्नवाल सेंट लारेन्स नदी के किनारे ओटावा से ५६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। कार्नवाल नहर यहीं समाप्त होती है। यहां ग्रांडट्रंक रेलवे में कई दूसरी लाइने मिलती है। यहां ऊनी-सूती कपड़ा बुनने, कागज बनाने आरा चीरने, लोहा ढालने, स्टोव और पलंग बनाने के कई कारखाने हैं।

एडमंटन नार्थ सस्कचवान नदी के किनारे पर कनेडियन पेसिफिक, कनेडियन नर्दन और ग्रांड ट्रंक रेलवे लाइनों का जंकशन और अल्बर्ट प्रान्त की राजधानी है। यह विनी पेग से ७६३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। इसके पड़ोस में कोयले की ३० बड़ी बड़ी खाने हैं।

इस जिले में खेती भी अच्छी होती है। यहाँ गेहूँ भरने के बड़े बड़े एली वेटर हैं। यहां आटा पीसने, लकड़ी चीरने, मांस को डब्बों में भरने, जौ की शराब बनाने और लोहा ढालने के बड़े बड़े कारखाने हैं। यहीं अल्बर्टा प्रान्त का विश्वविद्यालय है। नदी के दूसरे किनारे पर बसा हुआ स्ट्राथकोना का उप नगर भी अल्बर्टा में ही शामिल है। दोनों की जन संख्या लगभग १ लाख है।

फोर्ट विलयम सुपीरियर झील के सिरे पर जहाज़ों का अन्तिम बन्दरगाह है। यहाँ कनेडियन पेसिफिक, कनेडियन नर्दन और ग्रांड ट्रंक लाइनों का जंकशन है। यह विनी पेग से ४२६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह पश्चिमी कनाडा के गेहूँ के प्रदेश का प्रधान द्वार है। यहाँ गेहूँ रखने के लिये बड़े बड़े एलीवेटर बने हैं। यहां आटा पीसने, लकड़ी चीरने, लोहा ढालने, जहाज़ बनाने और सीमेंट तयार करने के बड़े बड़े कारखाने हैं। पड़ोस में चांदी तांबा और लोहा साफ किया जाता है।

फ्रेजर विली सेंट लारेन्स और लूप नदी के संगम पर क्वेबेक शहर से ११८ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहाँ ग्रीष्म में बहुत से लोग मछली मारने केरिबो

(हिरण) का शिकार करने और सैर करने के लिये बहुत से लोग आते हैं। यहां रेलवे का कारखाना है। मक्खन और कागज़ की लुब्दी भी बनाई जाती है।

फ्रेडरिक्टन सेंट जान नदी के किनारे सेंट जान शहर से ५४ मील उत्तर-पश्चिम की ओर कनेडियन पेसिफिक रेलवे पर एक जंकशन स्टेशन और न्यूब्रंस्विक प्रान्त की राजधानी है। यहां आरा चीरने की मिलें नाव बनाने के कारखाने हैं। जूता और चमड़े का दूसरा सामान भी बनाया जाता है। यहां एक विश्व विद्यालय भी है।

टोरान्टो से ६० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर कनेडियन पेसिफिक और ग्रांडट्रंक रेलवे का जंकशन है। इसके पड़ोस में चूने का पत्थर लकड़ी और बालू बहुत है। खेती के यन्त्र, पीतल का सामान, इंजिन, बाइलर, गाड़ी के डब्बे और चमड़े का सामान बनाने का काम होता है।

ग्लेसबे इसी नाम की खाड़ी पर एक बन्दरगाह है। यह ४६०१२ उत्तरी अक्षांश और ५६०५८ पश्चिमी देशान्तर पर स्थित है। पड़ोस में कोयला बहुत निकाला

जाता है। तरह तरह की मशीनें और लकड़ी का सामान बनाया जाता है। मछली मारने का भी काम होता है।

ग्वेल्फ टोरांटो से ४८ मील पश्चिम की ओर कनेडियन पेसिफिक रेलवे, ग्रांडट्रंक रेलवे और कनेडियन नर्दन रेलवे लाइनों का जंक्शन है। यह एक सुन्दर कृषि प्रदेश में स्थित है। यहां का कृषि-कालेज प्रसिद्ध और प्रयोगात्मक कृषिशाला प्रसिद्ध है। यहाँ धातु और रबर का सामान, रेल के डब्बे, पियानो, बाजे, सीने की मशीन सूती ऊनी कपड़े और शराब बनाने का काम होता है।

हेमिल्टन आंटेरियो झील के पश्चिमी सिरे पर टोरांटो से ३६ मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह कनेडियन पेसिफिक और ग्रांड ट्रंक रेलवे लाइनों का जंक्शन है। यहां लोहे और फौलाद का सामान, बिजली के तार ऊनी सूती कपड़े और जूते बनाने का काम होता है। हल ओटावा नदी के किनारे पर ओटावा शहर के सामने स्थित है। यह कनेडियन पेसिफिक रेलवे का एक स्टेशन है। यहां रन्दा करने, सुअर का मांस बाहर भेजने,

सीमेंट, कागज और लकड़ी का सामान बनाने का काम होता है।

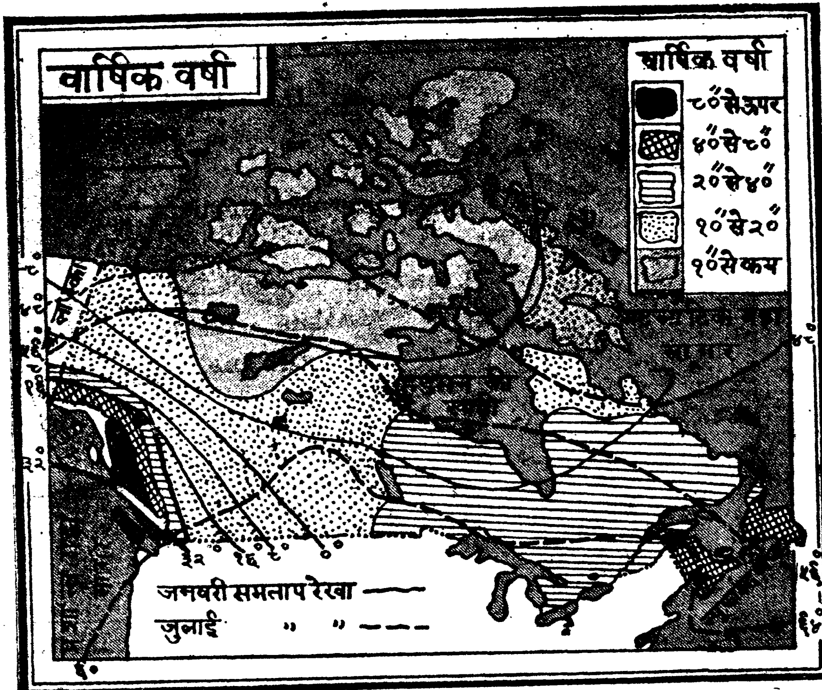
हेलीफैक्स शहर की प्रधानता इसके बन्दरगाह में है। यह कनैडियन पेसिफिक रेलवे का अन्तिम बन्दरगाह है। बन्दरगाह वर्ष भर खुला रहता है। यह एक पथरीले प्रायद्वीप के दक्षिण में स्थित है। यहाँ १००० समुद्री जहाज शरण ले सकते हैं। बन्दरगाह शहर के ऊपरी सिरे की ओर संकुचित हो गया है लेकिन पूर्व की ओर अधिक चौड़ा है। इसके समीप का दृश्य (विशेषकर एनाबोलिस्व की घाटी का दृश्य) बड़ा सुन्दर है। हेली-फैक्स में चुकन्दर की शक्कर, शराब, सिगरेट, कागज़, ऊनी सूती कपड़े, बाजे और कृषि यन्त्र बनाने का काम होता है।

जोलियट एसम्पशन नदी के किनारे मांट्रियल से ३६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह आरा चलाने, ऊनी कपड़ा और कागज़ बनाने के कारखाने हैं। सिग-रेट और लोहे का सामान भी तयार होता है। रसायन सम्बन्धी पदार्थ भी बनाये जाते हैं।

केनोर लेक आफ दी वुड्स के किनारे उस स्थान



पेशे
सोने की खदानें
कोयले ,,
लोहे ,,
खेती
लकड़ी काटना
फल उगाना
क्लानडाइक
नमदे (फर)
नमदे (फर)
नमदे (फर)
नमदे (फर)
संयुक्त राष्ट्र



वार्षिक वर्षा
वार्षिक वर्षा
८०" से ऊपर
४०" से ८०"
२०" से ४०"
१०" से २०"
१०" से कम
जनवरी समताप रेखा
जुलाई " "
३२ १६ ८ ०

पर बसा है जहां इसका जल निकल कर विनीपेग नदी में जाता है। यह कनेडियन पेसिफिक रेलवे का एक स्टेशन है। यह विनीपेग से १३३ मील पूर्व की ओर है। यहां लकड़ी चीरने, आटा पीसने की मिलें हैं। यहां बड़े बड़े एलीवेटर हैं। नावें भी बनाई जाती हैं।

किंग्स्टन उस स्थान पर बसा है जहां सेंट लारेंस नदी आंटेरिओ झील से बाहर आती है। यह टोरांटो से १८५ मील पूर्व की ओर है। यह कनेडियन पेसिफक रेलवे का एक स्टेशन है। ग्रीष्म काल में यहां बहुत से यात्री आते हैं। यहां लोहा ढालने, नाव बनाने, आटा पीसने, कपड़ा बुनने और शराब बनाने का काम होता है। यहां विश्व विद्यालय और मिलीटरी (सैनिक) कालेज है।

लेशीन सेंट लूई झील के किनारे स्थित है जो सेंट लारेंस नदी का अंग है। यह मांट्रियल से ८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। मांट्रियल और लेशीन के बीच में नौ मील लम्बी नहर है। मांट्रियल और लेशीन के बीच का जलीय व्यापार इसी नहर के मार्ग से होता है। सेंट-लारेंस नदी के लेशीन प्रपात को बचाने के लिये यह

जहाज़ी नहर बनाई गई। यहां कनेडियन पेसिफिक और ग्रांड ट्रंक रेलवे का स्टेशन है। यहां बिजली का कारबार है। यहां लोहे के बड़े बड़े कारखाने हैं। तार और नाव बनाने का काम होता है। गाड़ियां और लकड़ी की चीजें भी बनाई जाती हैं। फलों का अचार भी तयार होता है। लेथब्रिज बेली नदी के किनारे पर कनेडियन पेसिफिक और ग्रांडट्रंक रेलवे लाइनों का जंकशन है। यह केलगेरी से १४४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह कोयले की खानों के जिले का केन्द्र है। जिले में खेती भी बहुत होती है। यहाँ बड़े एलीवेटर और आटा पीसने की मिलें हैं। यहां सरकारी प्रयोगात्मक कृषि शाला है। यह एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र है।

लेविस सेंट लारेन्स नदी के किनारे क्वेबेक शहर के सामने स्थित है। यह रेल का जंकशन है। यहां सिगरेट बनाने, जहाज बनाने, लकड़ी चीरने, चमड़ा बनाने और जूता बनाने का काम होता है।

लन्दन कनाडा की टेम्स नदी के किनारे टोरांटो से ११५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह रेलवे जंकशन और कृषि प्रधान जिले का केन्द्र स्थान है। यहां

लोहे, टिन और पीतल का सामान बनाया जाता है। खेती के यन्त्र, शराब और रसायन-सम्बन्धी सामान बनाया जाता है। यहां पेट्रोल भी साफ किया जाता है। यहां एक विश्व विद्यालय है। इसको जनसंख्या ५०,००० है। लेकिन यहां लगभग ५ करोड़ रुपये का सामान प्रतिवर्ष तयार होता है।

मेडीसिन हेट साउथ सस्कचवान नदी के किनारे कनेडियन पेसिफिक रेलवे का एक स्टेशन है जो विनीपेग से ६६० मील पश्चिम की ओर है। यहां अनाज रखने के लिये एलीवेटर हैं। यहां लकड़ी और फौलाद के कारखाने हैं। पेंसिल और शीशे का सामान भी बनता है। चिकनी मिट्टी के अच्छे बर्तन बनते हैं। पड़ोस में कोयला, अच्छी चिकनी मिट्टी और नेचरल (प्राकृतिक) गैस पाई जाती है।

मान्क्टन बन्दरगाह फण्डी में गिरने वाली पेटित-कोडियाक नदी के किनारे पर स्थित है। यह ग्रांड ट्रंक पेसिफिक रेलवे का अन्तिम स्टेशन है और सेंटजान से ८६ मील उत्तर पूर्व की ओर है। यहीं इण्टर कलोनियल रेलवे का प्रधान केन्द्र और कारखाना है। सूती कपड़े

और तार बनाने के यहां कारखाने हैं। यहां आटा पीसने और लकड़ी का सामान भी बनाया जाता है। पड़ोस में मिट्टी का तेल और नेचरल गैस पाया जाता है।

माण्ट्रियल कनाडा का सब से बड़ा शहर है। यह कनाडा का प्रधान व्यापारिक केन्द्र है। माण्ट्रियल शहर माण्ट्रियल द्वीप के दक्षिणी-पूर्वी भाग में बसा है। ओटावा नदी सेण्ट लारेन्स में मिलने से पहले दो शाखाओं में बँट जाती है। माण्ट्रियल का त्रिभुजाकार द्वीप ओटावा की इन्हीं दो शाखाओं धाराओं के बीच में स्थित है। यह द्वीप लगभग ३० मील लम्बा और आठ-दस मील चौड़ा है। माण्ट्रियल शहर समुद्र-तल से १८७ फुट ऊंचा है। शहर का क्षेत्रफल लगभग ५ वर्गमील है। शहर की चौड़ाई दो मील है। नदी के किनारे से भीतर की ओर शहर के भाग क्रमशः ऊँचे होते गये हैं। एकदम पीछे समुद्र-तल से ६०० फुट ऊंची पहाड़ी है। जिसे मांट रियल या माउंट रायल कहते हैं। इसी से शहर का यह नाम पड़ा। यह शहर न्यूयार्क से प्रायः ४०० मील बेल आयल जल संयोजक से ६८० मील दूर है। यहां से इङ्गलैंड का लिवरपूल बन्दरगाह २७५० मील है। यहां

तक समुद्र के बड़े बड़े जहाज़ आ सकते हैं। सेंट लारेन्स बारह महीनों में चार महीने बरफ से जमी रहती है। फिर भी व्यापार की दृष्टि से संसार के बड़े व्यापारिक बन्दरगाहों में माण्ट्रियल का स्थान सातवां है। समस्त कनाडा का एक तिहाई आयात और निर्यात यहाँ होकर आता जाता है। कनेडियन पेसिफिक रेलवे के मार्ग से माण्ट्रियल वेंकूवर से २६०६ मील दूर है।

१६४२ ईस्वी में लकड़ी के लट्ठों को गाड़ कर फ्रांसीसी आगन्तुकों ने यहां लकड़ी के कुछ घर बना लिये थे। आज तीन सौ वर्ष बीतने पर माण्ट्रियल कनाडा का सब से बड़ा नगर है। इसकी जनसंख्या १० लाख से ऊपर है। यहां की सड़कें बड़ी चौड़ी हैं। विशाल भवन आकाश को छूते हैं। यहां कनाडा के बड़े बड़े बैंक एलीवेटर अस्पताल, स्कूल और विश्व विद्यालय हैं। यहां आधे से अधिक लोग फ्रांसीसियों की सन्तान हैं। $\frac{१}{६}$ आइरिश $\frac{१}{७}$ अंगरेज़ और $\frac{१}{१३}$ स्काट हैं। ७५ फीसदी लोग रोमन केथालिक हैं। नाटर डेम, स्टीट, जेम्स स्ट्रीट और मेडारिम स्ट्रीट में बढ़िया दुकाने हैं। प्रधान सड़कें नदी के समानान्तर चली गई हैं। इन पर

बड़ी भीर रहती हैं। अधिकतर दफ़्तर और बड़ी दुकानें भूरे चूने के पत्थर की बनी हैं जो पड़ोस में ही मिलता है।

माण्ट्रियल में कनेडियन पेसिफिक ग्रांड ट्रंक, कनेडियन नदर्न और इण्टर कलोनियल लाइनों का केन्द्र स्थान है। यहां चुकन्दर की शक्कर लोहे फौलाद और तरह तरह की मशीनों के कारखाने हैं। यहां सीने की मशीनें रेल की गाड़ियां, सूती, ऊनी, रेशमी कपड़े, रबर का सामान, शराब आदि के बड़े बड़े कारखाने हैं। आटा पीसने और डब्बों में मांस भरने के भी कारखाने हैं। प्रतिवर्ष ५० करोड़ रुपये से अधिक मूल्य का सामान इस अकेले शहर में तयार होता है। मिसांनोव कुछ ही मील की दूरी पर वास्तव में मांट्रियल का कारबारी मुहल्ला है।

मूज़जा थण्डरक्रीक और मूज़जा नदियों के संगम पर बिनीपेग से ३०८ मील पश्चिम की ओर कनेडियन पेसिफिक और कनेडियन नदर्न लाइनों का जंक्शन है। यहाँ आटा पीसने और दलिया दलने की मिलें हैं। फौलाद, लकड़ी और चमड़े का भी काम होता है। पड़ोस में कोयला और चिकनी मिट्टी अधिक है।

नेनेमो बन्दरगाह वेंकूवर द्वीप के पूर्वी तट पर स्थित है। यह वेंकूवर शहर से ३५ मील पश्चिम की ओर है। यहां कोयला निकालने लकड़ी चीरने और मछली मारने का काम होता है। पड़ोस में तांबा भी पाया जाता है।

नेल्सन कूटेने झील के पश्चिमी सिरे पर स्थित है। यहाँ तक नावें चल सकती हैं। यह कनेडियन पेसिफिक और ग्रेट नदर्न रेलवे का एक जंकशन स्टेशन है। यह फल और खनिज पदार्थों का केन्द्र है। यहां लोहे और नाव बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं। यहां फलों का मुरब्बा बनाया जाता है। ग्रीष्म काल में यहां बहुत से यात्री सैर करने आते हैं।

न्यू ग्लास्गो इंटर कलोनियल रेल मार्ग से नर्दम्बरलैंड का प्रणाली (पिक्टोलैंडिंग) से ८ मील दूर है। इस जिले में कच्चा लोहा और चूने का पत्थर बहुत है। यहाँ फौलाद और शीशे के बड़े बड़े कारखाने हैं। लकड़ी चीरने का काम भी होता है। न्यूवेस्ट मिनिस्टर फ्रेज़र नदी के किनारे प्रशान्त महासागर से १३ मील दूर है। यह वेंकूवर से १२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहाँ

कनेडियन पेसिफिक कनेडियन नदर्न और ग्रेट नदर्न रेलवे लाइनों का जंक्शन है। पश्चिमी कनाडा का यही एक ऐसा बन्दरगाह है जहाँ मीठा पानी है। यहाँ मछली मारने उन्हें डब्बों में भरने और सुखाने का काम होता है। यहाँ आरा चलाने कागज़, बाइलर और जहाज़ बनाने के कारखाने हैं। यहां रेल का भी कारखाना है।

न्याग्रा प्रपात न्याग्रानदी के पश्चिमी किनारे पर इसी नाम के प्रपात के नीचे स्थित है। इसी नाम का दूसरा नगर इसके सामने है संयुक्तराष्ट्र अमरीका में स्थित है। यह टोरांटो से ८२ मील दक्षिण की ओर है। यहां कनेडियन पेसिफिक कनेडियन नदर्न, ग्रांडट्रंक और दूसरी लाइनों का जंक्शन है। यहाँ बिजली का विशाल कारबार है जिससे कार्बोरुण्डम, ग्रेफाइट (पैंसिल) अल्मोनियम और लोहे आदि का सामान तयार होता है। ओरिलिया आंटेरियो प्रान्त में कोचीचिंग झील के किनारे ग्रांडट्रंक कनेडियन पेसिफिक और कनेडियन नदर्न लाइनों का जंक्शन है। यहाँ आटा पीसने, पल्प (लुब्दी) और ऊनी कपड़ा बनाने के कारखाने हैं। यहां रेल की गाड़ियां और मोटरकार बनाये जाते हैं।

ओशावा बन्दरगाह ओंटेरिओ झील के किनारे टोरांटो से ३५ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह फल और कृषि प्रदेश का एक केन्द्र है। यहां आटा पीसने, चुकन्दर की शक्कर बनाने और मुरब्बा बनाने का काम होता है। यहां चमड़ा कमाने और पियानो बनाने के भी कारखानें हैं।

ओवेन साउंड हूरन झील की जाजियन बे (खाड़ी) पर सिडनहम नदी के मुहाने पर स्थित है। यह टोरांटो से १२२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यह एक उत्तम बन्दरगाह है। यहां कनेडियन पेसिफिक और ग्रांडट्रंक रेलवे लाइनों का जंकशन है। यहाँ आटा पीसने, लकड़ी चीरने, लोहा ढालने और चमड़ा कमाने के कारखाने हैं। यहाँ अनाज रखने के एलीवेटर और मांस रखने के लिये ठंडे कमरे बने हुये हैं।

ओटावा कनाडा की राजधानी है। और यह ओटावा नदी के ऊंचे किनारे पर बड़ा सुन्दर शहर है। पार्लियामेंट भवन से नदी का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। समस्त कनाडा की राजधानी वहां हो इस बात पर प्रान्तों में बड़ा मतभेद था। प्रत्येक प्रान्त यही चाहता

था कि समस्त कनाडा को राजधानी उसी प्रान्त में बने। इस झगड़े को मिटाने के लिये नये ओटावा नगर में राजधानी बनाई गई। यहां कनेडियन पेसिफिक, कनेडियन नदर्न और ग्रांडट्रंक लाइनों का जंकशन है। यहां विश्वविद्यालय, ज्योतिष-वेधशाला और प्रयोगात्मक सरकारी कृषि शाला है। यह लकड़ी के व्यापार का प्रधान केन्द्र है। वहां आरा चीरने, कागज़ बनाने, कृषि यन्त्र, समुद्री पीपे व्यावइंट, सीमेंट और कपड़ा बनाने के कारखाने हैं।

पीटर बरो १५० फुट ऊंचा प्रपात बनाने वाली आक्टोनाबी के किनारे टोरांटो से ७० मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहाँ कनेडियन पेसिफिक और ग्रांडट्रंक रेलवे लाइनों और ट्रेंट नहर का मेला होता है। यह एक कृषि प्रदेश का व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ आटा पीसने, लकड़ी चीरने बिजली की मशीन, नाव, कालीन कृषि यन्त्र बनाने के कारखाने हैं। सुअर का माँस भी डब्बों में भर कर यहां से बाहर भेजा जाता है।

पोर्टेज ला प्रेरी मेनीटोबा प्रान्त में बिनीपेग से ५६ मील पश्चिम की ओर है। यह कनेडियन पेसिफिक

कनेडियन नदर्न, ग्रांडट्रंक रेलवे लाइनों का जंक्शन और अनाज के व्यापार का केन्द्र है। यहां अनाज रखने के बड़े बड़े एलीवेटर और आटा पीसने और दलिया दलने की मिलें हैं। यहां कृषि-यन्त्र, रेडियेटर आदि बनाने का काम होता है।

पोर्ट आर्थर सुपीरियर झील के किनारे उस स्थान पर स्थित है जहाँ तक जहाज़ आ सकते हैं। यह कनाडा के प्रायः मध्य में स्थित है। यहाँ से अटलांटिक तट १७०० मील और प्रशान्त तट १६०० मील दूर है। यह विनीपेग से ४२४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां कनेडियन पेसिफिक कनेडियन नदर्न, ग्रांडट्रंक और दूसरी लाइनों का जंक्शन है। यह अपने पड़ोसी बन्दरगाह फोर्ट विलियम से ४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह एक धनी कृषि प्रदेश का केन्द्र है। यहाँ कच्चे लोहे और जलशक्ति की भी अधिकता है। यहां अनाज रखने के एलीवेटर लोहे के कारखाने हैं। जहाज़ बनाने और रेल के भी कारखाने हैं।

प्रिंस एल्बर्ट सस्कचवान प्रान्त में नार्थ सस्कचवान नदी के किनारे स्थित है। यह रेजीना से २५० मील

उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां कनेडियन पेसिफिक कनेडियन नर्दन और ग्रांडट्रंक रेलवे लाइनों का जंकशन है। यह एक विशाल वन प्रदेश के मध्य में है जो उत्तर की ओर २००० वर्ग मील तक फैला हुआ है। यहाँ आरा चलाने रन्दा करने नाव बनाने और आटा पीसने के कारखाने हैं।

प्रिन्स रूपर्ट बन्दरगाह सिम्पसियन बन्दरगाह पर वेंकूवर से ५५० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यह ग्रांडट्रंक पेसिफिक रेलवे का अन्तिम स्टेशन और उत्तम बन्दरगाह है।

क्वेबेक इसी नाम के प्रान्त की राजधानी, और कनाडा के भीतर प्रवेश करने के लिये प्रथम बन्दरगाह है यह सेण्ठ लारेन्स नदी के उत्तरी सपाट किनारे पर स्थित है। उत्तरी अमरीका भर में इसकी स्थिति बड़ी सुन्दर है। क्वेबेक के पास है। सेन्ट लारेन्स नदी में सेंट चार्ल्स नदी मिलती है। यह मांट्रियल से १८० मील उत्तर-पूर्व की ओर है। इसका विशाल बन्दरगाह उत्तरी अमरीका के उत्तम बन्दरगाहों में से एक है। लेकिन यह शीतकाल में (आधे दिसम्बर से आधे अप्रैल

तक) बरफ से घिरा रहता है। यहाँ कनेडियन पेसिफिक, कनेडियन नदर्न और ग्रांडट्रंक लाइनों का जंकशन है। यहां आरा चलाने, चमड़ा कमाने के कारखाने हैं। यहाँ नाव, सिगरट और बिस्कुट बनाने का भी काम होता है। जूते और सूती कपड़े भी बनाये जाते हैं।

रेजीना सस्कचवान प्रान्त की राजधानी है। यह विनीपेग से ३५८ मील उत्तर पश्चिम की ओर है। कनेडियन पेसिफिक और कनेडियन नदर्न रेलवे लाइनों का जंकशन है। यहां अनाज रखने के लिये बड़े बड़े एलीवेटर बने हैं। आटा पीसने, चमड़ा कमाने, लोहा ढालने के कारखाने हैं।

सेंट बोनी फेस मैनीटोबा प्रान्त में रेंडरिवर के किनारे विनीपेग के सामने स्थित है। यहाँ एलीवेटर हैं। यहां आटा पीसने लकड़ी चीरने, तेल पेरने और शराब बनाने के कारखाने हैं।

सेंट केथरिन टोरांटो से ७१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर बीलैंड नहर के किनारे स्थित है। यह आंटेरिओ के फल-प्रदेश का केन्द्र है। यहां फलों का मुरब्बा, कागज, कृषि यन्त्र बिस्कुट बनाने का काम होता है। रन्दा करने और आटा पीसने की भी मिलें हैं।

सेंट हेसिन्थ क्वेबेक प्रान्त में माण्ट्रियल से ३६ मील पूर्व की ओर स्थित है। यहां कनेडियन पेसिफिक, ग्रांडट्रंक, और इण्टर कलोनियल लाइनों का जंकशन है। यहां चमड़े का सामान, जूता, बाजा, लकड़ी का सामान और ऊनी, कपड़ा बनाने का काम होता है।

सेंट जान न्यूब्रेज़विक प्रान्त में फण्डी बे के किनारे सेन्ट जान नदी के मुहाने का बन्दरगाह है। कनेडियन पेसिफिक और इण्टर कलोनियल लाइनों का यह अन्तिम स्टेशन है। यह बन्दरगाह साल भर खुला रहता है। इसी से यह हेलीफैक्स बन्दरगाह से टक्कर लेता है। लकड़ी का सामान, सूती कपड़े, कागज़, जहाज़, लोहे का सामान इंजिन, बाइलर, कील, ब्रुश, साबुन बनाने का काम होता है। मछली भी पकड़ी जाती हैं। प्रतिवर्ष तीन चार करोड़ रुपये का सामान तयार किया जाता है। सेण्ट टामस आण्टेरिओ प्रान्त में टोरांटो से १३० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यहां कनेडियन पेसि-फिक, ग्रांडट्रंक और दूसरी लाइनों का जंकशन है। यह एक कृषि और फल-प्रदेश का केन्द्र है। यहां रन्दा करने, आटा पीसने, लोहे और पीतल का सामान, बिस्कुट

और जूते बनाने का काम होता है। रेल का भी कारखाना है।

सार्निया ऑटेरिओ प्रान्त में सेंट क्लेर नदी के मुहाने के पास हूरन झील के तट पर स्थित है। यह टारांटो से १७० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह ग्रांडट्रंक लाइन पर एक ऐसे जिले का केन्द्र स्थान है जहां नमक, लकड़ी और मिट्टी का तेल बहुत है। यहां आरा चलाने नमक निकालने और मिट्टी का तेल साफ करने के बड़े बड़े कारखानें हैं। यहां लुब्रीकेट (मोबील आयल) गाड़ियों के डब्बे और लकड़ी का सामान तैयार करने के कारखाने हैं।

सस्केटन सस्कचवान प्रान्त में साउथ सस्कचवान नदी के किनारे स्थित है। यह विनीपेग से ४६० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहाँ कनेडियन नदर्न और ग्रांडट्रंक पेसिफिक लाइनों का जंक्शन है। यह एक कृषि प्रदेश का केन्द्र है। यहां आरा चलाने, आटा पीसने, लोहा ढालने लकड़ी का सामान बनाने और कृषि यन्त्र बनाने के कारखाने हैं। यहां एक विश्व विद्यालय और कालेज और प्रयोगात्मक कृषि शाला है।

साल्टसेंट मेरी आण्टेरियो प्रान्त में सेंट मेरी नदी के किनारे स्थित है जो हूरन और सुपीरियर झीलों को जोड़ती है। यह टोरांटो से ३६७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर कनेडियन पेसिफिक रेलवे का एक स्टेशन है। यहां लोहे और लकड़ी के बड़े बड़े कारखाने हैं।

शेरब्रुक क्वेबेक प्रान्त में प्रयोग और सेंट फ्रेंसिस नदियों के संगम पर स्थित है। यह माण्ट्रियल से १०१ मील पूर्व दक्षिण की ओर कनेडियन पेसिफिक, ग्रांडट्रंक और दूसरी लाइनों का जंकशन है। यह एक ऐसे जिले का केन्द्र है जिसमें अस्बस्टास और तांबे की खाने बहुत हैं। पल्प कागज़ की लुब्दी भी बहुत बनाई जाती है। यहां मशीन, कालीन, लकड़ी का सामान और ऊनी कपड़े बहुत बनाये जाते हैं।

सोरल, क्वेबेक प्रान्त में रिचलो नदी के मुहाने पर उस स्थान पर गिरती है जहां यह सेंटलारेन्स नदी की सेंट पीटर झील में गिरती है। यह मांट्रियल शहर से ४५ मील उत्तर-पूर्व की ओर कनेडियन पेसिफिक रेलवे का एक स्टेशन है। यहां आरा चलाने की मिलें हैं। लोहा

ढालने, कृषि यन्त्र बनाने और ऊनी कपड़ा बुनने का काम होता है।

स्टैफर्ड एक प्रसिद्ध रेलवे जंकशन है। यह टोरांटो से ८८ मील दक्षिण पश्चिम की ओर है। यह एक कृषि प्रदेश का केन्द्र है। यहां आटा पीसने सुअर का मांस बाहर भेजने का काम होता है। यहां रेल का कारखाना भी है।

सडबरी आंटेरिओ प्रान्त में ओटावा शहर से ३१२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। यह एक खनिज सम्पन्न जिले का केन्द्र है जिसमें निकेल, कोबाल्ट तांबा और प्लेटीनम बहुत पाया जाता है। यहां कच्ची धातु को सोधने और लकड़ी चीरने के बड़े बड़े कारखाने हैं।

सिडनी अटलांटिक तट का उत्तम बन्दरगाह और इण्टर कलोनियल रेलवे का स्टेशन है। यह एक ऐसे जिले का केन्द्र है जहां कोयला, लोहा, तांबा, संगमरमर, चूने का पत्थर और लकड़ी बहुत है। यहां मशीन, स्टोव, रसायन, सीमेंट, ईंट, और संगमरमर का सामान बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं।

थेटफर्ड माइन्स क्वेबेक प्रान्त में क्वेबेक सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन का केन्द्र है। यहां एस्बेस्टास और क्रोम लोहे की खानें हैं

टोराण्टो नगर आंटेरियो प्रान्त की राजधानी है और आंटेरिओ झील के उत्तरी तट पर स्थित है। यह माण्ट्रियल से ३३३ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर कनेडियन नर्दन और ग्रांडट्रंक लाइनों का जंकशन है। व्यापार और कारबार की दृष्टि से टोराण्टो शहर का स्थान समस्त कनाडा में दूसरा है। इसका विशाल बन्दरगाह इसी नाम की खाड़ी पर है। यहां कृषि यन्त्र बनाने लोहे की ढलाई करने आटा पीसने लकड़ी चीरने, चमड़ा कमाने, जहाज़, पियानो शराब बनाने और ग्रन्थ प्रकाशित करने का काम होता है। यहां एक प्रसिद्ध विश्व विद्यालय है।

थ्रीरिवर्स क्वेबेक प्रान्त में सेण्टमारिस और सेंट लारेन्स नदियों के संगम पर क्वेबेक और माण्ट्रियल के मध्य में (६८ मील की दूरी पर) स्थित है। इसके बन्दरगाह में ३० फुट गहरे पानी पर चलने वाले जहाज़ आ सकते हैं। यहां लकड़ी चीरने, स्टोप और

जूता बनाने का काम होता है। ट्रूरो फंडी बे की पूर्व शाखा पर हेलीफैक्स से ६२ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह इएटर कलोनियल लाइन का एक प्रसिद्ध स्टेशन है। यहां हैट (टोपी) ऊनी कपड़े और मशीन बनाने का काम होता है।

वेलीफील्ड सेन्टलारेन्स नदी के किनारे माट्रियल से ३० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर ग्रांडट्रंक और दूसरी लाइनों का जंकशन है। इसके समीप लकड़ी, लोहा और चूने का पत्थर बहुत पाया जाता है। यहां सूती कपड़ा, बिस्कुट, कागज बनाने आटा पीसने लकड़ी चीरने और लोहा ढालने की मिलें हैं।

वेंकूवर ब्रिटिश कोलम्बिया का सब से बड़ा शहर और बुरार्ड की खाड़ी पर प्रशान्त तट का सर्वोत्तम बन्दरगाह है। कनेडियन पेसिफि, कनेडियन नदर्न और कई अन्य रेलवे लाइनों का यह अन्तिम स्टेशन है। यहां जहाज़ बनाने, लोहा ढालने, आटा पीसने, लकड़ी चीरने, चीनी बनाने और (हेलीबूट) मछलियों को डब्बे में भरने का काम होता है।

विक्टोरिया वेंकूवर द्वीप के दक्षिणी-पूर्वी तट पर

ब्रिटिश कोलम्बिया की राजधानी है। यह वेंकूवर से ८० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यहाँ की जलवायु बड़ी उत्तम है। यहाँ एक विश्वविद्यालय यहाँ जहाज़ बनाने, मछली मारने और आरा चलाने का काम होता है। सील मारने का भी काम होता है। इसके पड़ोस में लोहा, कोयला और तांबा बहुत है। विक्टोरिया से ३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर एस्क्वीमाल्ट का बन्दरगाह और जहाज़ी अड्डा है।

वीलैंड ओंटेरियो प्रान्त में वीलैंड नहर पर स्थित है। यह टोरांटो से ८२ मील दक्षिण की ओर है। यहां लोहे और फौलाद के कारखाने हैं। मोटरकार, कृषि यन्त्र और स्टोव बनाने का काम होता है। यहां लोहे और पीतल के पलंग और रस्से बनाने का काम होता है।

विंडज़र, डिट्राइट नदी के किनारे सेंट क्लेर झील के द्वार पर स्थित है। यहां से बड़ी झीलों तक अच्छा जलमार्ग है। यह टोरांटो से २२८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर कनेडियन पेसिफिक ग्रांड ट्रंक और दूसरी लाइनों का जंकशन है। यहां नमक, रसायन, मशीन,

स्टोव, मोटरकार बनाने, लकड़ी चीरने और नमक निकालने के कारखाने हैं। पड़ोस में चूने के पत्थर और नमक की खाने हैं।

विनीपेग मेनीटोबा प्रान्त की राजधानी है। यह यसीनी बोइन और रेडरिवर (नदियों) के संगम पर स्थित है।
